

॥ ओ३म् ॥

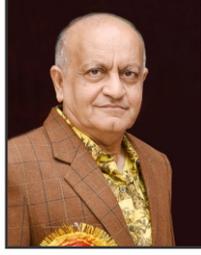
प्रार्थना पुस्तक

ओ३म्



आर्य समाज - जामनगर

જામનગર આર્યસમાજના પદાધિકારીઓ



શ્રી દીપકભાઈ જે. ઠક્કર
પ્રમુખ



શ્રી કિર્તીબેન એન. ભટ્ટ
ઉપ-પ્રમુખ



શ્રી મહેશલાઈ બી. રામાણી
માનદ્ મંત્રી



શ્રીમતી પૂનમબેન જે. ખન્ના
ઉપ-મંત્રી



શ્રી વિનોદલાઈ એમ. નાંઢા
કોષાધ્યક્ષ



શ્રી દીપકભાઈ બી. નાંઢા
પુસ્તકાધ્યક્ષ

આર્યસમાજ જામનગરના અંતરંગ સદસ્યો



ડો.ધીરુભાઈ એમ. ભટ્ટ
સદસ્ય



શ્રી નરેન્દ્રભાઈ સી. મહેતા
સદસ્ય



શ્રી જગદીશભાઈ પી. મકવાણા
સદસ્ય



શ્રી અરવીંદભાઈ ડી. મહેતા
સદસ્ય



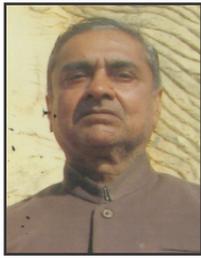
શ્રી ધીરજલાલ એમ. નાંઠા
સદસ્ય



શ્રી ભરતભાઈ જી. આશાવર
સદસ્ય



શ્રી અર્જુનભાઈ એન. ભટ્ટ
સદસ્ય



શ્રી સતપાલજી આર્ય
નિમંત્રીત



શ્રીમતી નીમુબેન એમ. રામાણી
નિમંત્રીત

॥ ओ३म् ॥
॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥
(विश्वको आर्य - 'संस्कारी' बनायें)
साप्ताहिक सत्संगो के लिये

प्रार्थना पुस्तक

(सार्वदेशिक धर्मार्य सभा से प्रमाणित)

सार्वदेशिक धर्मार्य सभाना प्रतिष्ठित आर्य विद्वानोऽपि निरंतर परिश्रम करी, महर्षि दयानंदजीके निर्दिष्ट करेल यज्ञ पर विचार करी, यज्ञानी पद्धतिओनुं संकलन करेल छे.

आ पुस्तकमां आर्योऽपि प्रतिदिन करवाना प्रातःजगरण, सन्ध्या, सामान्य दैनिक यज्ञ तथा बृहद् यज्ञ, राष्ट्रीय प्रार्थना, संगठन सूक्तना मंत्रो तथा साप्ताहिक सत्संगोमां उपयोगी प्रार्थनागान, लजन आदि आपेल छे.

समग्र भारतमां ऐकसूत्रता जणवाध रहे ते माटे सार्वदेशिक धर्मार्य सभाके नककी करेल कम अनुसार आ पुस्तक प्रकट करवामां आपेल छे.

आ पुस्तकनी आ सुधारेली १० मी आवृति 'आर्यसमाज जामनगर' द्वारा प्रसिद्ध थाय छे.

आ पुस्तकना पुङ्क रीडिंग माटे आर्य समाज-जामनगरना निमंत्रित अंतरंग सदस्य श्रीमती निमुनेन महेशभाई रामाणी अने श्री मिन्दुनेन योपटीया अे मट्ट करेल छे.

दीपक जयंतिलाल ठक्कर

प्रमुज : आर्यसमाज अने आर्यविधासभा - जामनगर.

महेश भाएणुभाई रामाणी

मानद् मंत्री : आर्यसमाज अने आर्यविधासभा - जामनगर.

प्रकाशक

आर्य विद्या सभा - आर्यसमाज जामनगर

२०२० ई.स. प्रतः १०,००० - भार्य-जुन - २०२० मूल्य : २०.००

(2)

॥ ओ३म् ॥

आर्यसमाज जमनगर द्वारा संयालित विविध प्रवृत्तियो

१. दैनिक यज्ञ - सवारे अने सांजे
२. साप्ताहिक सत्संग - रविवार सवारे ८.३० कलाके
३. पारिवारिक सत्संग
४. वार्षिकोत्सव
५. वैदिक संस्कार प्रचार - मानवजुवन विकास अर्थे १५ वैदिक संस्कार अने विविध धार्मिक कर्मकांड संपूर्ण वैदिक पध्दतिथी कराववानी व्यवस्था.
६. निःशुल्क औषधालय तथा अेकयुपेशर निदान केन्द्र
७. सार्वजनिक पांयनालय
८. आर्य साहित्य तथा हवन सामग्री विक्रय विलाग
९. कन्या केणवणी-श्रीमद् दयानंद कन्या विद्यालय बालमंदिर थी धो. १२.
१०. रोग निदान केम्पोनुं आयोजन.
११. गरीब परिवारोमां समय-समय पर अनाज, कपडां दत्त्यादि जुवन जइरीयातनी वस्तुओनुं वितरला.
१२. आर्यसमाज मंदिरमां वैदिक तथा राष्ट्रीय (पर्व) तहेवारो उजववामां आवे छे. जेवा के, (१) मकर संक्रान्ति (२) गलातंत्र दिवस (३) वसंत पंचमी (४) महर्षि दयानंद जन्म दिवस (५) ज्योति पर्व (शिवरात्री ओधोत्सव) (६) पंडितवीर लेभारामतृतीया (७) मिलन पर्व (होणी) (८) आर्य समाज स्थापना दिवस (९) राम नवमी (१०) श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबंधन) (११) श्री कृष्ण जन्माष्टमी (१२) स्वतंत्रता दिवस (१३) विजयादशमी (दशेरा) (१४) महर्षि दयानंद सरस्वति निर्वाण दिवस (दिपावली) (१५) बलिदान पर्व (स्वामी श्रध्दानंद बलिदान दिवस)
१३. आर्यवीर तथा वीरांगना दल
१४. वेबसाईट द्वारा वेद प्रचार
१५. मेडीकल साधन सहाय

(3)

प्रातः षागराणां मंत्रो

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम ॥
- ऋग्वेद ७।४१।१

अर्थ - (प्रातः) प्रभात समय में (अग्निम्) स्वप्रकाश - स्वरूप (प्रातः) (इन्द्रम्) परमैश्वर्य के दाता और परमैश्वर्ययुक्त (प्रातः) (मित्रावरुणा) प्राण उदान के समान प्रिय और सर्वशक्तिमान् (प्रातः) (अश्विना) सूर्य चन्द्र जिसने उत्पन्न किये हैं, उस परमात्मा की (हवामहे) स्तुति करते हैं और (प्रातः) (भगम्) भजनीय, सेवनीय, ऐश्वर्ययुक्त (पूषणम्) पुष्टिकर्ता (ब्रह्मणस्पतिम्) अपने उपासक वेद और ब्रह्माण्ड के पालन करनेहारे (प्रातः) (सोमम्) अन्तर्यामी प्रेरक (उत) और (रुद्रम्) पापियों को रूलानेहारे और सर्वरोगनाशक जगदीश्वर की (हुवेम) स्तुति प्रार्थना करते हैं ।

भावार्थ : प्रातः काणे ईश्वरनी उपासना, अग्निहोत्र, प्राणायाम द्वारा पान अने अपाननी पुष्टि द्वारा माता, पिता, अध्यापक उपदेशक आदि विद्वानोने प्रणाम, मान अने वेदोनी अलयास करपो जोईये

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधृता ।
आधश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्विद्राजा चिद्यं भगं भूक्षीत्याह ॥
- ऋग्वेद ७।४१।२

अर्थ - (प्रातः) पाँच घड़ी रात्रि रहे (जितम्) जयशील (भगम्) ऐश्वर्य के दाता (उग्रम्) तेजस्वी (अदितेः) अन्तरिक्ष के (पुत्रम्) सूर्य की उत्पत्ति करने और (यः) जो कि सूर्यादि लोकों को (विधृता) विशेष करके धारण करनेहारा (आधः)

(4)

सब ओर से धारणकर्ता (यं चित्) जिस किसी का भी (मन्यमानः) जाननेहारा (तुरश्चित्) दुष्टों का भी दण्डदाता और (राजा) सबका प्रकाशक है। (यं) जिस (भगम्) भजनीय स्वरूप को (चित्) भी (भक्षीति) इस प्रकार सेवन करता है, कि तुम, जो मैं सूर्यादि जगत् का बनाने और धारण करनेहारा हूँ, उस मेरी उपासना को किया करो और मेरी आज्ञा में चला करो, इससे (वयम्) हम उसकी (हुवेम) स्तुति करते हैं।

भाषार्थ : सदा प्रातःकाली यथाशक्ति-सामर्थ्य विद्या प्राप्ति अने पुरुषार्थ थी ऐश्वर्यने उत्पन्न करी आनन्दनो उपभोग करी ईश्वरनी आज्ञा प्रमाणे चालीये।

भग प्रणेत्तुर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।
भग् प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग् प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥
- ऋग्वेद ७।४१।३

अर्थ - हे (भग) भजनीयस्वरूप ! (प्रणेतः) सबके उत्पादक सत्याचार में प्रेरक (भग) ऐश्वर्यप्रद (सत्यराधः) सत्यधन के देनेहारे (भग) धर्मात्माओं के ऐश्वर्यदाता, (नः) हमको (इदम्) इस (धियम्) प्रज्ञा को (ददत्) दीजिये, और उनके दान से हमारी (उदव) रक्षा कीजिये। हे (भग), आप (गोभिः) गाय आदि (अश्वैः) घोड़े आदि उत्तम पशुओं के योग से राज्य श्री को (नः) हमारे लिए (प्रजनय) प्रकट कीजिये। हे (भग), आपकी कृपा से हम लोग (नृभिः) उत्तम मनुष्यों से (नृवन्तः) बहुत वीर मनुष्यों वाले (प्रस्याम) अच्छे प्रकार होवें।

भाषार्थ : सर्व उत्पादक, सत्यधनने देनार, सत्याचरण करनारने आश्रय आपनार हे परमेश्वर, अमने प्रज्ञा आपो अने अमारी रक्षा करो. आपनी कृपाथी अमो उत्तम वीर मनुष्य बनौये।

(5)

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अहाम् ।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥
- ऋग्वेद ७।४१।४

अर्थ - हे भगवन् ! आपकी कृपा (उत) और अपने पुरुषार्थ से हम लोग (इदानीम्) इसी समय (प्रपित्वे) प्रकर्षता व उत्तमता की प्राप्ति में (उत) और (अहाम्) इन दिनों के मध्य में (भगवन्तः) ऐश्वर्ययुक्त शक्तिमान् (श्याम) हों, (उत) और हे (मघवन) परमपूजित असंख्यधन देनेहारे । (सूर्यस्य) सूर्यलोक के (उदिता) उदय में (देवानां) पूर्ण विद्वान् धार्मिक आप्त लोगों की (सुमतौ) अच्छी उत्तम प्रज्ञा (उत) और सुमति में (वयम्) हम लोग (स्याम) सदा प्रवृत्त रहें ।

भावार्थ : हे भगवन् ! आपकी कृपाथी अने अमारा पुरुषार्थथी अने उत्तमता पामीअे ऐश्वर्ययुक्त अने शक्तिशाली बनीअे सूर्यलोकना उदयमां पूर्ण विद्वान, उत्तम, प्रज्ञावाणा अने सुमतिमां सदा प्रवृत्त रहीअे।
भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम ।
तं त्वा'भगु सर्वु इज्जो'हवीति, स नो' भग पुरएता भवेह ॥
- ऋग्वेद ७।४१।५

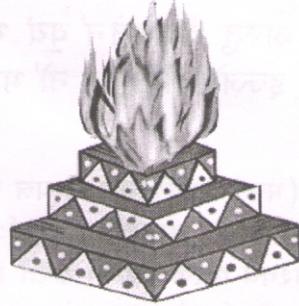
अर्थ - हे (भग) सकलैश्वर्य सम्पन्न जगदीश्वर ! जिसमें (तम्) उस (त्वा) आपकी (सर्वः) सब सज्जन (इतजोहवीति) निश्चय करके प्रशंसा करते हैं, (सः) सो आप हे (भग) ऐश्वर्यप्रद ! (इह) इस संसार और (नः) हमारे गृहाश्रम में (पुरः एता) अग्रगामी और आगे - आगे सत्यकर्मों में बढ़ानेहारे (भव) हूजिए, जिससे (भग : एव) सम्पूर्ण ऐश्वर्ययुक्त और समस्त ऐश्वर्य के दाता होने से आप ही हमारे (भगवन्)

(6)

पूजनीय देव (अस्तु) हूजिए, (तेन) इसी हेतु से (देवाः वयम्) हम विद्वान् लोग (भगवन्तः) सकलैश्वर्य सम्पन्न होके सब संसार के उपकार में, तन, मन, धन से प्रवृत्त (स्याम) होवें ।

भावार्थ : हे सकल ऐश्वर्यसम्पन्न जगदीश्वर ! आप अमारा संसारमां अग्रगामी अने अमारा पूजनीय थाओ, जेथी अमो सकल ऐश्वर्य प्राप्त करी जगतना उपकारमां तन, मन, अने धनथी प्रवृत्त थछअ.

ओ३म् शान्तिः! शान्तिः! शान्तिः!



१. अथ संध्या - ब्रह्मयज्ञः

सन्ध्यानी शङ्खातमां गायत्री मंत्रानो पाठ करी शिष्या बांधी रक्षा करपी.

गायत्री मन्त्रः

ओ३म् । भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ - यजुः ० ३६।३

(सवितुः) जो सब जगत् का उत्पन्न करनेहारा और ऐश्वर्य को देनेवाला है (देवस्य) जो सबके आत्माओं का प्रकाश करनेवाला और सुखों का दाता है (वरेण्यम्) जो अत्यन्त ग्रहण करने योग्य (भर्गः) शुद्ध विज्ञानस्वरूप है । (तत्) उसको (धीमहि) हम लोग सदा प्रेम भक्ति से निश्चय करके अपने आत्मा में धारण करें । किस प्रयोजन के लिये ? कि (यः) जो पूर्वोक्त सविता देव परमेश्वर है वह (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) कृपा करके सब बुरे कर्मों से अलग करके सदा उत्तम कामों में प्रवृत्त करें -

भावार्थ - हे प्रभु ! आप सत् चित् आनन्दस्वरूप प्राणदाता दुःखनाशक सुखस्वरूप हैं । आप संसार के रचयिता हैं और ग्रहण करने योग्य हमारे परम देव हैं ।

हे देव ! हम आपके सत्यज्ञानस्वरूप तेज को धारण करें जो हमारी बुद्धियों को शुद्ध पवित्र कर शुभ कर्मों में प्रेरित करें ।

भावार्थ : हे प्रभु ! आप सत्, चित्, आनन्दस्वरूप प्राणदाता, दुःखनाशक, सुखस्वरूप छी. आप संसारना रचयिता छी अने ग्रहण करवा योग्य अमारा परम देव छी. हे देव ! अमे आपना सत्यज्ञानस्वरूप तेजने धारण करीअे जे अमारी बुद्धिने शुद्ध पवित्र करी शुभ कर्मोंमां प्रेरित करे.

(8)

अथाचमन मन्त्रः

ओं शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये ।
शँयोरभिस्त्रवन्तु नः ॥ - यजु : ० ३६ । १२

भावार्थ : हे सर्वनाशक परमात्मा, आ (देवीः) दिव्य (आपः)
जल (अभिष्टये) सारी दृष्टा पूर्ण करवावागुं, (पीतये) संतोष आपनारुं
अने (शम्) कल्याणकारी थाओ अने (नः) अमारी उपर (शँयो)
कल्याणानी (अभिस्त्रवन्तु) अभिवृष्टि करनारुं थाओ.

अथ अङ्गस्पर्श

नीयेना मंत्रथी अंगस्पर्श करवो. (डाबा हाथमां जल लई जमला
हाथनी टयलीनी बाजुनी (अनाभिका) अने पयली (मध्यमा)
आंगणीथी स्पर्श करवो.)

ओं वाक् वाक् । हे ईश्वर, अमारी वाणीशक्ति अने
वाणीने जणवान बनावो.
ओं प्राणः प्राणः । हे ईश्वर, अमारी प्राणशक्ति अने
प्राणने जणवान बनावो.
ओं चक्षुः चक्षुः । हे ईश्वर, अमारी दृष्टि अने नेत्रने
जणवान बनावो.
ओं क्षौत्रं श्रोत्रम् । हे ईश्वर, अमारी श्रवणशक्ति अने
कानोने जणवान बनावो.
ओं नाभिः । हे ईश्वर, अमारी नाभिने जणवान
बनावो.
ओं हृदयम् । हे ईश्वर, अमारा हृदयने जणवान
बनावो.
ओं कण्ठः । हे ईश्वर, अमारा कंठने जणवान
बनावो.

(9)

- ओं शिरः । हे ईश्वर, अमारा मस्तकने जणवान
जनावो.
ओं बाहुभ्यां यशोबलम् । हे ईश्वर, अमारी लुजाओने यशस्वी
अने जणवान जनावो.
ओं करतलकरपृष्ठे । हे ईश्वर, अमारी हथेणी अने
हाथनी पीठने मज्जूत जनावो.

अथ मार्जन मन्त्राः

(नीचेना मंत्रथी बीज अने वयली आंगणीओथी जल छांटपुं)

- ओं भूः पुनातु शिरसि । हे सर्वरक्षक परमेश्वर, तमे अमारा
मस्तकने पवित्र राजो.
ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः । हे दुःखविनाशक परमात्मा,
अमारी आंजोने पवित्र राजो.
ओं स्वः पुनातु कण्ठे । हे सुखस्वर्ूप परमात्मा, अमारा
कंठने पवित्र राजो.
ओं महः पुनातु हृदये । हे सर्वथी महान परमेश्वर, अमारा
हृदयने पवित्र राजो.
ओं जनः पुनातु नाभ्याम् । हे सर्वना उत्पादक पिता, अमारी
नाभिने पवित्र राजो.
ओं तपः पुनातु पादयोः । हे दण्डदाता परमेश्वर, अमारा
पगने पवित्र राजो.
ओं सत्यं पुनातु पुनः
शिरसि । हे सत्यस्वर्ूप परमेश्वर, अमारी
वारंवार प्रार्थना छे के अमारा मस्तकने
पवित्र राजो.

(10)

ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र । हे सर्वव्यापक परमेश्वर,
अमारां सर्व अंगोने सर्वदा,
सर्वथा पवित्र राजो.

अथ प्राणायाम मन्त्रा :

नीयेना मंत्रथी प्राणायाम करवा.

ओं भूः । ओं भुवः । ओं स्वः । ओं महः । ओं जनः ।
ओं तपः । ओं सत्यम् ।

लावार्थ : हे सर्वरक्षक परमपिता, आप (भूः) प्राणोना प्राण
(भुवः) दुःख विनाशक, (स्वः) सुख स्वरूप, (महः) सर्वथी मोटा
(जनः) सर्वना उत्पादक (तपः) दंड देवावाणा (सत्यम्) सदैव
सत्यस्वरूप छो. हे परमपिता, अमो आपनुं सदा चिंतन करीये.

अथाघमर्षणमन्त्रा :

ओम् । ऋतं च सत्यं चाभिद्वात्तपसोऽध्यजायत ।

ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽर्णवः ॥ १ ॥

- ऋ० १० । १९० । १

लावार्थ : हे परमेश्वर, (ऋतं) वेद अने (सत्यं च) सत्य प्रकृति
(पृथ्वी, जल, आकाश, अग्नि, वायु) (अभिद्वात् तपसः) आपना
अत्यंत सामर्थ्य थी आप पूर्ण प्रकाशमान प्रभुये ज (अध्याजायत)
रयेल छे. (ततः) आपे ज (रात्री) प्रलय अने (समुद्रो) मेघमंडल तथा
(अर्णवः) समुद्र आदि (अजायत) बनावेल छे.

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽजायत ।

अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ २ ॥

- ऋ० १० । १९० । २

ભાવાર્થ : હે પરમેશ્વર, (સમુદ્રાત્ અર્ણવાત્ અધિ) મેઘ મંડલ તથા સમુદ્ર બનાવ્યા પછી (અહોરાત્રાણિ) દિન અને રાત આદિ (વિદધત્) બનાવ્યાં. બાદ આપે (સંવત્સરઃ) કાળ વિભાગ (અજાયત) ઉત્પન્ન કર્યા. આપ (મિષતઃ) સહજ સ્વભાવથી (વિશ્વસ્ય) સારા જગતને (વશી) આપના વશમાં રાખનાર છો.

સૂર્યાચન્દ્રમસૌ ધાતા યથાપૂર્વમકલ્પયત્ ।

દિવં ચ પૃથિવીં ચાન્તરિક્ષમથો સ્વઃ ॥ ૩ ॥

- ઋ૦ ૧૦ । ૧૧૦ । ૩

ભાવાર્થ : હે ઈશ્વર, (યથાપૂર્વમ્) જે રીતે અગાઉ સૃષ્ટિના આરંભમાં બનાવ્યાં હતા તેમ (સૂર્યાચન્દ્રમસૌ) સૂર્ય, ચંદ્ર, (દિવઞ્ચ) ધુલોક (પૃથ્વીઞ્ચ) પૃથ્વીલોક અને (અન્તરિક્ષમ્) અંતરિક્ષ તથા (સ્વઃ) સર્વલોકલોકાન્તરો ને ઉત્પન્ન કરનારા (ધાતા) આપ છો.

અથ આચમન મન્ત્રઃ

નીચેના મન્ત્રથી ત્રણ આચમન કરવાં.

ઓં શન્નો દેવીરભિષ્ટયઽઆપો ભવન્તુ પીતયે ।

શૈયોરભિસ્ત્રવન્તુ નઃ ॥

- યજુઃ ૦ ૩૬ । ૧૨

(આ મન્ત્રનો અર્થ અગાઉ આવી ગયો છે.)

અથ મનસાપરિક્રમા - મન્ત્રા :

ઓમ્ । પ્રાચી દિગગ્નિરધિપતિરસિતો રક્ષિતાદિત્યા
ઇષવઃ । તેભ્યો નમોઽધિપતિભ્યો નમો રક્ષિતૃભ્યો નમ્ ઇષુભ્યો નમ્
અભ્યો અસ્તુ । યોઽસ્માન્ દ્વેષ્ટિ યં વ્યં દ્વિષ્મસ્તં વો
જમ્ભેં દધમઃ ॥ ૧ ॥

- અર્થવ ૦ ૩ । ૨૭ । ૧

(પ્રાચી) પૂર્વ (દિગ્) દિશાના (અધિપતિઃ) અધિપતિ
(અગ્નિઃ) પ્રકાશસ્વરૂપ (અસિત્) સર્વ બંધન રહિત (રક્ષિતા)

(12)

સર્વપ્રકારે રક્ષણ કરવાવાળા, (આદિત્યાઃ ઇષવઃ) જેના બાણ આદિત્યનાં કિરણો છે (તેભ્યો..... અસ્તુ) એવા હે પરમેશ્વર, અમે તમને વારંવાર વંદન કરીએ છીએ. (યોઅસ્માન્) હે પ્રભુ, જે કોઈ અમારી સાથે (દ્વેષ્ટિ) દ્વેષ રાખે છે અથવા (યં) જેની સાથે (વયં) અમે (દ્વિષ્મઃ તં) દ્વેષ કરીએ છીએ તેને (વઃ) આપને (જમ્ભે) હવાલે (દધ્મઃ) કરીએ છીએ.

ભાવાર્થ : હે પૂર્વ દિશામાં વિરાજમાન પરમેશ્વર, અમોને વેદના જ્ઞાન દ્વારા લાભ થાય અને અમારે કોઈથી વેર ન હો.

દક્ષિણા દિગિન્દ્રોઽધિપતિસ્તિરશ્ચિરાજી રક્ષિતા પિતર
ઇષવઃ। તેભ્યો નમોઽધિપતિભ્યો નમો રક્ષિતૃભ્યો નમ ઇષુભ્યો
નમ એભ્યો અસ્તુ । યોઽસ્માન્ દ્વેષ્ટિ યં વયં દ્વિષ્મસ્તં વો
જમ્ભે દધ્મઃ ॥૨ ॥ - અથર્વ ૦ ૩। ૨૭। ૨

(દક્ષિણા) દક્ષિણ (દિગ્) દિશાના (ઇન્દ્ર અધિપતિ) એશ્વર્યવાળા અધિપતિ, (તિરશ્ચિરાજી રક્ષિતા) જે પદાર્થ કીટ, પતંગ, વૃશ્ચિક આદિ તિર્યક પશુ પક્ષીની પેઠે વેદ વિરુદ્ધ ચાલવાવાળાની કુસંગરૂપી હાનિથી રક્ષા કરવાવાળા આપ છો. (પિતર ઇષવઃ) જ્ઞાની મનુષ્યનાં ઉપદેશરૂપી બાણો દ્વારા (રક્ષિતા) અમારી રક્ષા કરો છો. (તેભ્યો) આગળનો અર્થ ઉપર આવી ગયેલ છે.

ભાવાર્થ : હે દક્ષિણ દિશાના અધિપતિ પરમેશ્વર, અમે જ્ઞાનીઓના ઉપદેશથી લાભ ઉઠાવીએ અને અમારો કોઈથી દ્વેષ ન હો.

પ્રતીચી દિગ્વરુણોઽધિપતિઃ પૃદાકૂ રક્ષિતાન્નમિષવઃ । તેભ્યો
નમોઽધિપતિભ્યો નમો રક્ષિતૃભ્યો નમ ઇષુભ્યો નમ એભ્યો અસ્તુ ।
યો ઽસ્માન્ દ્વેષ્ટિ યં વયં દ્વિષ્મસ્તં વો જમ્ભે દધ્મઃ ॥ ૩ ॥

(પ્રતીચી) પૃથ્વી વરુણ એક (પ્રતીચી) પૃથ્વી - અથર્વ ૦ ૩। ૨૭। ૩

(પ્રતીચી) પશ્ચિમ (દિગ્) દિશાના (અધિપતિઃ) અધિપતિ (વરુણઃ) ભજવા યોગ્ય (પૃથ્વાકૃ) વાઘ, વરુ, વીંછી, સાપ વગેરે વિષધારી જીવોથી (અન્નમ્) અન્ન આદિ (ઈષવઃ) ઓષધિઓરૂપી બાણો અર્થાત્ અજ્ઞાનનાશક પ્રેરણાઓ દ્વારા (રક્ષિતા) રક્ષણ કરનાર હે ઈશ્વર, (તેભ્યો) (આગળનો મન્ત્રનો અર્થ ઉપર આવી ગઓ છે.)

ભાવાર્થ : હે પશ્ચિમની દિશામાં પણ વિરાજમાન જગદીશ્વર, અન્ન આદિ ઓષધિઓ અર્થાત્ અજ્ઞાનનાશક પ્રેરણાથી અમોને લાભ થાય. અમારે કોઈથી વેર ન હો.

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनि
रिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो
नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेषिष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो
जम्भे दधमः ॥ ४ ॥

- અર્થવ ૦ ૩ । ૨૭ । ૪

(उदीची) ઉત્તર (દિગ્) દિશાના (અધિપતિઃ) અધિપતિ (સોમઃ) શાન્ત્યાદિ ગુણોથી આનંદ આપનાર (સ્વજઃ) સ્વયં પ્રકાશસ્વરૂપ (અશનિઃ) વીજળીના પ્રકાશરૂપી (ઈષવઃ) બાણો દ્વારા અમારી (રક્ષિતા) રક્ષા કરો છો, (તેભ્યો) (આગળનો મન્ત્રનો અર્થ ઉપર આવી ગઓ છે.)

અર્થ : ઉત્તર દિશાનો શાંતિ આપનાર ઈશ્વર સ્વામી છે. તે પોતે અજન્મા અને સર્વની રક્ષા કરનાર છે. વિદ્યુત તેના બાણની જેમ છે. તેમને અમારા નમસ્કાર થાઓ. જગતની રક્ષા કરનારને નમસ્કાર થાઓ. જે કોઈ અમારાથી દ્વેષ રાખે છે કે જેનાથી અમે દ્વેષ રાખીએ છીએ, તે દ્વેષને અમે આપ ઈશ્વરની ન્યાયરૂપી દાઢમાં મૂકીએ છીએ.

(14)

ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता
वीरुध इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो
नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं
द्विष्मस्तं वो जम्भे दधमः ॥५॥ - अथर्व ० ३। २७। ५

(ध्रुवा) नीचेनी (दिग्) दिशाना (अधिपतिः) अधिपति
(विष्णुः) सर्वव्यापक परमेश्वर, आप (कल्माषग्रीवः) नाना
प्रकारनी कृष्ण आदि रंगोपाणी (वीरुध इषव) नीचेथी उपर जती
पनस्पतिरूपी (वेल) भाएा द्वारा अर्थात् उपर लई जपानी भापनाओ
द्वारा (रक्षिता) अमारी रक्षा करो छे. (तेभ्यो) (आगणनो अर्थ
उपर आपी गयेल छे.)

भावार्थ : हे नीचेनी दिशामां पएा विराजमान जगतस्वामी,
पनस्पतिओ अर्थात् उपर उठवापाणी विविध भापनाओ द्वारा अमो
लाल उठापीओ अने अमारे कोइथी वेर न हो

ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः शिवेत्रो रक्षिता
वर्षमिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम
इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं
द्विष्मस्तं वो जम्भे दधमः ॥ ६ ॥ - अथर्व ० ३। २७। ६

(ऊर्ध्वा) उपरनी (दिग्) दिशाना (अधिपतिः)
अधिपति (बृहस्पतिः) पूर्ण विद्वान प्रभु, आप (शिवेत्रः) अमारा
आत्मानी बूरी वृत्तिओ अर्थात् शरीरने कोठ आदि महान रोगथी
(वर्षमिषवः) ज्ञान अर्थात् जलनी वर्षांरूपी भाएाओ द्वारा (रक्षिता) रक्षा
करो छे. (तेभ्यो) (आगणनो मन्त्रनो अर्थ उपर आपी गयो छे.)

भावार्थ : उपरनी दिशामां पएा विराजमान हे परमात्मा, ज्ञान
अर्थात् जलनी वर्षाथी अमोने लाल थाय. अमारे कोइथी वेर न हो.

(15)

अथोपस्थानमन्त्राः

ओम् । उद्भयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्तऽ उत्तरम् ।

देवन्देवत्रा सूर्यमगन्म् ज्योतिरुत्तमम् ॥ १ ॥

- यजु ० ३५।१४

हे परमेश्वर, (तमसस्परिस्वः) सर्व अंधकारથી અલગ પ્રકાશસ્વરૂપ (ઉત્તરમ્) પ્રલય પછી પણ સદા વર્તમાન (દેવં દેવત્રા) દેવોના દેવ, (સૂર્યમ્) સર્વવ્યાપક (જ્યોતિરુત્તમમ્) પ્રકાશસ્વરૂપ, સર્વમાં ઉત્તમ, (પશ્યન્તઃ) આપને માનીને (ઉદ્ભયં) અમો શ્રદ્ધાપૂર્વક આપને (અગન્તમ્) પ્રાપ્ત કરીએ

ભાવાર્થ : હે પરમાત્મા, માતાની ગોદ સમાન અમોને આપનો આશ્રય મળે. અમો આપને શ્રદ્ધાથી પ્રાપ્ત કરીએ.

उद् त्वं जातवेदसन्देवं वहन्ति केतवः ।

दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥ २ ॥

- यजुः ० ૩૩।૩૧

(ઉદુત્યં જાતવેદસમ્) જેનાથી ચારે વેદ પ્રસિદ્ધ થયા છે, જે પ્રકૃતિ આદિ સર્વ ભૂતોમાં વ્યાપ્ત છે, જે સર્વ જગતના ઉત્પાદક જાતવેદાઃ નામથી પ્રસિદ્ધ છે, (દેવમ્) જે સર્વ દેવોના દેવ (સૂર્યમ્) સર્વ જીવ આદિ જગતના પ્રકાશક છે, (ત્યમ્) તે પરમાત્માની (દૃશે વિશ્વાય) વિશ્વવિદ્યાની પ્રાપ્તિને માટે અમો ઉપાસના કરીએ છીએ. અમોને શ્રદ્ધાપૂર્વક (કેતવઃ) વેદ શ્રુતિઓનું (વહન્તિ) જ્ઞાન કરવો.

ભાવાર્થ : હે પ્રભુ, અમોને 'વેદ' નું જ્ઞાન કરાવો.

चित्रन्देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्रे : ।

आप्रा द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षं सूर्यऽआत्मा जगत-
स्तस्थुषश्च स्वाहा ॥ ૩ ॥

- यजुः ૦ ૭।૪૨

(ચિત્રં દેવાનાં) પ્રાણી અને જડ જગતના(સૂર્ય આત્મા) આત્મા જેને સૂર્ય કહેવામાં આવે છે, જેણે (દ્યાવા) ધુલોક (પૃથિવી)

(16)

પૃથ્વીલોક (અન્તરિક્ષ) મધ્યસ્થ લોક આદિ (આપ્રા) રચીને કાયમ (સ્થિર) કરેલ છે, (ચક્ષુર્મિત્રસ્ય) જે મિત્ર અને પ્રકાશ કરનાર છે. (વરુણસ્યાગ્ને) ભદ્ર મનુષ્યોમાં જે પ્રકાશ સમાન છે, જે (અનીકમ્) શક્તિમાન બળના ભંડાર છે તે પરમેશ્વર (ઉદગાત) અમારા હૃદયમાં યથાવત પ્રકાશિત રહે

ભાવાર્થ : હે રક્ષક પરમાત્મા, આપ જ સંસારના કર્તા, ધર્તા છો. આપ અમારા હૃદયમાં પ્રકાશિત રહો.

તચ્ચક્ષુર્દેવહિતં પુરસ્તાચ્છુક્રમુચ્ચરત્ । પશ્યેમ શરદઃ શતઞ્જીવેમ
શરદઃ શત્ શૃણુયામ શરદઃ શતમ્પ્રબ્રવામ શરદઃ શતમદીનાઃ
સ્યામ શરદઃ શતમ્ભૂયશ્ચ શરદઃ શતાત્ ॥ ૪ ॥- યજુઃ ૦ ૩૬ । ૨૪

હે ઈશ્વર, આપ (તચ્ચક્ષુર્દેવહિતમ્) વિદ્વાનોને કલ્યાણકારી રસ્તો બતાવો છો. (પુરસ્તાચ્છુક્રમુચ્ચરત) અને સદૈવ સત્યસ્વરૂપ છો. હે પરમેશ્વર, (જીવેમ શરદઃ શતમ્) સો વર્ષ જીવીને (પશ્યેમ્ શરદઃ શતમ્) સો વર્ષ સુધી આપનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરીએ અને સારા પદાર્થો જોતા રહીએ. (શ્રુણુયામ શરદઃ શતમ્) સો વર્ષ સુધી આપના ઉપદેશ આદિ સારી વાતો સાંભળતા રહીએ. (પ્રબ્રવામ શરદઃ શતમ્) સો વર્ષ સુધી આપના ગુણગાન કરતા રહીએ (અદીનાઃ સ્યામ શરદઃ શતમ્) સો વર્ષ સુધી સર્વ આધીનતાઓ અને રોગથી બચીને રહીએ તથા (ભૂયશ્ચ શરદઃ શતાત્) સો વર્ષથી પણ અધિક અમો આવા પ્રકારના કામ કરતા રહીને જીવીએ.

ભાવાર્થ : હે ઈશ્વર, અમો સારાં કર્મ કરતાં કરતાં નિરોગી રહીને સો વર્ષની જિંદગી વિતાવીએ.

નીચેના મન્ત્ર ત્રણ વખત બોલવો

અથ ગાયત્રી - મન્ત્રઃ

ઓં ભૂર્ભુવઃ સ્વઃ । તત્સવિતુર્વરેણ્યં ભર્ગો દેવસ્ય ધીમહિ
ધियो યો નઃ પ્રચોદયાત્ ॥ - યજુ ૦ ૩૬ । ૩

(આ મન્ત્રનો અર્થ અગાઉ આવી ગયો છે.)

(17)

अथ समर्पणम्

हे ईश्वर दयानिधे । भवत्कृपयानेन जपोपासना -
दिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः ।

हे ईश्वर दयानिधि, आपनी कृपाથી અમે જે જે ઉત્તમ કામ કરીએ
છીએ તે તે સર્વે આપને સમર્પણ કરીએ છીએ, જેથી અમો આપને પ્રાપ્ત
કરીને ધર્મ અર્થાત્ સત્ય, અર્થ, કામ અને મોક્ષ પ્રાપ્ત કરીએ. (આ ચાર
પદાર્થોની સિદ્ધિ અમોને શીઘ્ર પ્રાપ્ત થાઓ.)

नमस्कार - मन्त्र :

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय
च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

- यजु ० १६।४१

હે પરમેશ્વર, આપ (શંભવાય) સુખદાતા છો અને (મયોભવાય)
સર્વને સદા સુખી રાખવાવાળા છો. હું આપને (નમઃ) નમસ્કાર કરું છું.
(શંકરાય) મંગલકારી પ્રભુ, હું આપને નમન કરું છું. (મયસ્કરાય) સર્વને
માટે મંગલ કરનાર (ચ) તથા (શિવાય) કલ્યાણકારી (ચ) તથા
(શિવતરાય) સર્વનું અધિકથી અધિક કલ્યાણ કરવાવાળા પરમેશ્વર,
આપને નમસ્કાર કરું છું.

ભાવાર્થ : હે પરમાત્મા, સર્વનું કલ્યાણ કરો, હું આપને નમસ્કાર
કરું છું.

ओ३म शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

इति सन्ध्योपासनविधिः ।

२. देव-यज्ञः

अथ ऋत्विग्वरणम्

यजमानोक्तिः- ओम् आवसोः सदने सीद ।

ऋत्विगुक्तिः- ओं सीदामि ।

यजमानोक्तिः- अहमद्योक्तकर्मकरणाय भवन्तं वृणे ।

ऋत्विगुक्तिः- वृतोऽस्मि ।

अथ संकल्पः

ओ३म् तत् सत् श्री ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्धे वैवश्वते मन्वन्तरे
अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बू-द्वीपे भरत-खण्डे
आर्य्यावर्तेक देशान्तरगते राज्ये
जनपदे नगरे, उत्तरा/दक्षिणा अयने,
एकविंशत्यधिकत् उत्तर, एकोनपञ्चाशत्सहस्र उत्तर, एकोन
त्रिशत्लक्षोत्तर, सप्तनवतिकोटि उत्तर, एक - वृन्द - तमे सृष्टि
अब्दे, सप्तसप्तति - उत्तर, द्वि सहस्रे वैक्रमे वर्षे
सप्तनवति उत्तर एक शते दयानन्द वर्षे ऋतौ
..... मासे पक्षे तिथौ..... वासरे ।

अद्य अस्माभिः सन्ध्या-उपासनादिकं / बृहद्-यज्ञादिकं,
शुभं कर्म क्रियते, तेन तृप्यतु भगवान्-यज्ञ देवः ।

दक्षिणायन - २२ जून थी २२ डिसेम्बर तथा

उत्तरायण - २३ डिसेम्बर थी २१ जून

- | | |
|-----------------------------|--------------------------|
| १. हेमन्त - कार्तिक - मागशर | ४. ग्रीष्म - पेशाज - जेठ |
| २. शिशिर - पोष - महा | ५. वर्षा - अषाढ - श्रावण |
| ३. वसंत - श्रावण - चैत्र | ६. शरद - भाद्रपद - आसो |

(19)

अथ आचमनमन्त्राः

नीचेनो ऐक-ऐक मंत्रं नीली ऐक-ऐक आचमनं कर्युं.

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥ १ ॥ इससे एक

(ओ३म्) हे ईश्वर, आप (अमृत) जल समान (उपस्तरणम्) आश्रय-शांति देवावाणा (असि) छो. आप अमोने शान्ति प्रदान करो. (स्वाहा) अमारो भाव सदा ते प्रभाछे रहे.

भावार्थ : हे ईश्वर, अमोने सदा आश्रय अने शांति आपो.

ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥ २ ॥ इससे दूसरा

हे परमेश्वर, आप अमने (अमृत) जल समान (अपिधानम्) रक्षा प्रदान करो. (स्वाहा) अमारो भाव सदा ते प्रभाछे रहे.

भावार्थ : हे परमेश्वर, अमारुं रक्षा करो.

ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥ ३ ॥

-तैत्तिरीय आरण्यक प्र० १०। अनु० ३२। ३५

हे परमेश्वर, आप (सत्यं) सत्य (यशः) यश तथा (श्रीः) लक्ष्मी (विद्या, धन, ऐश्वर्य आदि) (मयि) मने (श्रीः श्रयतां) सदा प्राप्त करावो. (स्वाहा) अमारो भाव सदा ते प्रभाछे रहे.

भावार्थ : हे परमेश्वर, अमोने सदा सत्य, यश अने लक्ष्मी प्राप्त थाओ.

अथ अङ्गस्पर्शमन्त्राः

नीचेना मंत्रथी डावा हाथमां जल लईते जलमां जमला हाथनी (मध्यमां अने अनामिका आंगणीओथी) नीचे लप्या अनुसार अंगस्पर्श करवो.

ओं वाङ् मऽआस्येऽस्तु । आ मंत्रथी मुजने स्पर्श करो.

भावार्थ : हे परमेश्वर, मारा मुजमां सदा पवित्र वाणी हो.

(20)

ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु । आ मंत्रथी नासिकानां બળને ઇન્દ્રોને સ્પર્શ કરો.

ભાવાર્થ : હે પરમેશ્વર, મારી નાસિકામાં સદા પ્રાણ રહો.

ઓમ્ અક્ષ્ણોર્મે ચક્ષુરસ્તુ । આ મંત્રથી બળને આંખોને સ્પર્શ કરો.

ભાવાર્થ : હે પરમેશ્વર, મારા બળને નેત્રોમાં સદા જોવાની શક્તિ રહો.

ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु । આ મંત્રથી બળને કાનને સ્પર્શ કરો.

ભાવાર્થ : હે પરમેશ્વર, મારા બળને કાનમાં સદા સાંભળવાની શક્તિ રહો.

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु । આ મંત્રથી બળને બાહુને સ્પર્શ કરો.

ભાવાર્થ : હે પરમેશ્વર, મારે બળને ભુજામાં સદા બળ રહો.

ઓમ્ ऊर्वोर्मैऽओजोऽस्तु । આ મંત્રથી બળને સાથળોને સ્પર્શ કરો.

ભાવાર્થ : હે પરમેશ્વર, મારા બળને સાથળોમાં સદા શક્તિ રહો.

ઓમ્ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ।

- પારસ્કરગૃં કણ્ડિકા ૩ । સૂ ૦ ૨૫ ॥

આ મંત્રથી આખા શરીર પર જલ છાંટો.

ભાવાર્થ : હે ઈશ્વર, મારા તમામ અંગો રોગરહિત અને શરીર બળવાન રહો.

(21)

अथेश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्राः

ओ३म् । विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव ।

यद् भद्रन्तन् आ सुव ॥ १ ॥ - यजुः ० ३०।३

अर्थ - हे (सवितः) सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त (देव) शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर ! आप कृपा करके (नः) हमारे (विश्वानि) सम्पूर्ण (दुरितानि) दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को (परा सुव) दूर कर दीजिए, (यत्) जो (भद्रम्) कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ है, (तत्) वह सब हमको (आ सुव) प्राप्त कीजिए ॥ १ ॥

भाषार्थ : हे परमेश्वर, अमारी सर्व बुराईओ दूर करो अने भलाईओ प्राप्त करावो.

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ २ ॥

- यजुः ० १३।४

अर्थ - जो (हिरण्यगर्भः) स्वप्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करनेहारे सूर्य - चन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, जो (भूतस्य) उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का (जातः) प्रसिद्ध (पतिः) स्वामी (एकः) एक ही चेतनस्वरूप (आसीत्) था, जो (अग्रे) सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व (समवर्त्तत) वर्तमान था, (सः) वह (इमाम्) इस (पृथिवीम्) भूमि (उत्) और (द्याम्) सूर्यादि को (दाधार) धारण कर रहा है, हम लोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) शुद्ध परमात्मा के लिए (हविषा) ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अतिप्रेम से (विधेम) विशेष भक्ति किया करें ॥ २ ॥

भाषार्थ : सङ्ग संसारना स्वामी परमेश्वर, अमे सदा आपनी लडितमां निमग्न रहीअे.

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं
यस्य देवाः। यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय
हविषा विधेम ॥ ३ ॥ - यजुः ० २५।१३

अर्थ - (यः) जो (आत्मदाः) आत्मज्ञान का दाता, (बलदाः) शरीर, आत्मा और समाज के बल का देनेहारा, (यस्य) जिसकी (विश्वे) सब (देवाः) विद्वान् लोग (उपासते) उपासना करते हैं और (यस्य) जिसका (प्रशिषम्) प्रत्यक्ष, सत्यस्वरूप शासन और न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, (यस्य) जिसका आश्रय ही मोक्षसुखदायक है, जिसका न मानना, अर्थात् भक्ति न करना ही (मृत्युः) मृत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप, (देवाय) सकल ज्ञान के देनेहारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए (हविषा) आत्मा और अन्तःकरण से (विधेम) भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा - पालन करने में तत्पर रहें ॥

भाषार्थ : हे अणटाता परमेश्वर, अमो आपनी आज्ञानुं पालन करता रहीअे.

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽइद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशेऽस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ४ ॥

यजुः ० २३।३

अर्थ - (यः) जो (प्राणतः) प्राणवाले और (निमिषतः) अप्राणिरूप (जगतः) जगत् का (महित्वा) अपने अनन्त महिमा से (एकः इत्) एक ही (राजा) विराजमान राजा (बभूव) है, (यः) जो (अस्य) इस (द्विपदः) मनुष्यादि और (चतुष्पदः) गौ आदि प्राणियों के शरीर की (ईशे) रचना करता है, हम लोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) सकलैश्वर्य के देनेवाले परमात्मा की उपासना अर्थात् (हविषा) अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञा - पालन में समर्पित करके (विधेम) भक्ति करें ॥ ४ ॥

(23)

भावार्थ : हे सर्वना स्वामी परमेश्वर, अमो हृदयधी आपनी
उपासना करता रहीअे.

येन द्यौरुगा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः ।
योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा
विधेम ॥ ५ ॥ - यजुः ० ३२।६

अर्थ - (येन) जिस परमात्मा ने (उग्रा) तीक्ष्ण
स्वभाववाले (द्यौः) सूर्य आदि (च) और (पृथिवी) भूमि
को (दृढा) धारण, और (येन) जिस जगदीश्वर ने (स्वः) सुख
को (स्तभितम्) धारण और (येन)। जिस ईश्वर ने (नाकः)
दुःखरहित मोक्ष को धारण किया है, (यः) जो (अन्तरिक्षे)
आकाश में (रजसः) सब लोक - लोकान्तरों को (विमानः)
विशेष मानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे
सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग
उस (कस्मै) सुखदायक (देवाय) कामना करने के योग्य
परब्रह्म की प्राप्ति के लिए (हविषा) सब सामर्थ्य से (विधेम)
विशेष भक्ति करें ॥ ५ ॥

भावार्थ : सर्व लोकलोकान्तरने बनापनार अने तेने आकाशमां
विमाननी पेहे यलापनार प्रभुनी अमो साया दिलधी स्तुति करता रहीअे.

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता
बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽ अस्तु वयं स्याम
पतयो रयीणाम् ॥ ४ ॥ - ऋ० १०।१२१।१०

अर्थ - हे (प्रजापते) सब प्रजा के स्वामी परमात्मन्
(त्वत्) आपसे (अन्यः) भिन्न, दूसरा कोई (ता) उन, (एतानि)
इन (विश्वा) सब (जातानि) उत्पन्न हुए जड़-चेतनादिकों को
(न) नहीं (परि बभूव) तिरस्कार करता है, अर्थात् आप
सर्वोपरि हैं। (यत्कामाः) जिस - जिस पदार्थ की कामनावाले

(24)

हम लोग (ते) आपका (जुहुमः) आश्रय लेवें और वाञ्छा करें,
(तत्) उस - उसकी कामना (नः) हमारी (अस्तु) सिद्ध होवे,
जिससे (वयम्) हम लोग (रणीयाम्) धनैश्वर्यो के
(पतयः) स्वामी (स्याम) होवें ॥६॥

भाषार्थ : हे सर्वथी महान परमेश्वर, आ ४५ अने येतन
जगतमां आपना करतां कोय मोटुं नथी. अमे धनवान अने ऐश्वर्यवान
थयथे.

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद् भुवनानि
विश्वा । यत्र देवाऽमृतमानशानास्तृतीये
धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥

अर्थ - हे मनुष्यो ! (सः) वह परमात्मा (नः) अपने
लोगों का (बन्धु) भ्राता के समान सुखदायक, (जनिता)
सकल जगत् का उत्पादक, (सः) वह (विधाता) सब कामों का
पूर्ण करनेवाला, (विश्वा) सम्पूर्ण लोकमात्र और (धामानि)
नाम, स्थान, जन्मों को (वेद) जानता है और (यत्र) जिस
(तृतीये) सांसारिक सुख-दुःख से रहित, नित्यानन्दयुक्त
(धामन्) मोक्षस्वरूप धारण करनेवाले परमात्मा में (अमृतम्)
मोक्ष को (आनशानाः) प्राप्त होके (देवाः) विद्वान् लोग
(अध्यैरयन्त) स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना
गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है, अपने लोग मिलके
सदा उसकी भक्ति किया करें ॥७॥

भाषार्थ : हे सहायक ईश्वर, अमोने मोक्षनी प्राप्ति करापो.

अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान् विश्वानि देव वयुनानि
विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूर्यिष्ठान्ते नमऽउक्तिं
विधेम ॥ ८ ॥

(25)

अर्थ - हे (अग्ने) स्वप्रकाश, ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाशित करनेवाले, (देव) सकल सुखदाता परमेश्वर ! आप जिससे (विद्वान्) सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके (अस्मान्) हम लोगों को (राये) विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए (सुपथा) अच्छे, धर्मयुक्त, आप्त लोगों के मार्ग से (विश्वानि) सम्पूर्ण (वयुनानि) प्रज्ञान और उत्तम कर्म (नय) प्राप्त कराइए और (अस्मत्) हमसे (जुहुराणम्) कुटिलतायुक्त (एनः) पापरूप कर्म को (युयोधि) दूर कीजिए। इस कारण हम लोग (ते) आपकी (भूयिष्ठाम्) बहुत प्रकार की स्तुतिरूप (नमः उक्तिम्) नम्रतापूर्वक प्रशंसा (विधेम) सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें ॥ ८॥

- यजु। ४०। १६

भावार्थ : हे पूर्ण विद्वान परमेश्वर, अमोने बूरां कर्मोथी बयापीने आपनी लडितभां लगाडो.

इतीश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनाप्रकरणम् ।

जन्मदिवस पर बालक को आशीर्वाद के मन्त्र

ओं शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान् ।
शमिन्द्राग्नीं सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः ॥ १ ॥

- ऋ० १०। १६१। ४ ॥ तु० अथर्व०- ३। ११। ४ ॥

ओं इन्द्रश्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे ।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमहम् ॥ २ ॥

- ऋ० २। २१। १६ ॥

यजमान को आशीर्वाद

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान्यज्ञेन बोधय ।

आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं यजमानम् च वर्धय ॥

- अथर्व वेद। ११। ७। ३५ ॥

अथ स्वस्तिवाचनम्

ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ॥ १ ॥ - ऋ० १।१।१

स नः पितेव सूनवेऽग्रे सूपायनो भव । सचस्वा नः
स्वस्तये ॥ २ ॥ - ऋ० १।१।१

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदिति
रन्वणः । स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति
द्यावापृथिवी सुचेतुना ॥ ३ ॥ - ऋ० ५।५१।११

स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य
यस्पतिः । बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय
आदित्यासो भवन्तु नः ॥ ४ ॥ - ऋ० ५।५१।१२

विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः
स्वस्तये । देवा अन्ववृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः
पात्वंहसः ॥ ५ ॥ - ऋ० ५।५१।१३

स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति । स्वस्ति न
इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ॥ ६ ॥

- ऋ० ५।५१।१४

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ॥ ७ ॥ - ऋ० ५।५१।१५

ये देवानां यज्ञियां यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता
ऋतज्ञाः । ते नो रासन्तामुरुगायमद्य युयं पात
स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ८ ॥ - ऋ० ७।३५।१५

(27)

येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदि -
तिरद्रिबर्हाः । उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ
अनु मदा स्वस्तये ॥ ९ ॥ - ऋ० १० । ६३ । ३

नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्वेवासो अमृतत्व -
मानशुः । ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते
स्वस्तये ॥ १० ॥ - ऋ० १० । ६३ । ४

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिहृता दधिरे दिवि
क्षयम् । ताँ आ विवासु नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ
अदितिं स्वस्तये ॥ ११ ॥ - ऋ० १० । ६३ । ५

को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो
मनुषो यतिष्ठन । को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः
पर्षदत्यंहः स्वस्तये ॥ १२ ॥ - ऋ० १० । ६३ । ६

येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त
होतृभिः । त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त
सुपथा स्वस्तये ॥ १३ ॥ - ऋ० १० । ६३ । ७

य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च
मन्तवः । ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्षद्या देवासः पिपृता
स्वस्तये ॥ १४ ॥ - ऋ० १० । ६३ । ८

भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैत्यं
जनम् । अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः
स्वस्तये ॥ १५ ॥ - ऋ० १० । ६३ । ९

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं
सुप्रणीतिम् । दैवीं नार्वं स्वरित्रामनागसमस्त्रवन्तीमा रुहेमा
स्वस्तये ॥ १६ ॥ - ऋ० १० । ६३ । १०

(28)

विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया
अभिहृतः । सत्यया वो देवहृत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे
स्वस्तये ॥ १७ ॥ - ऋ० १०।६३।११

अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रा-
मघायतः । आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरु णः शर्म यच्छता
स्वस्तये ॥ १८ ॥ - ऋ० १०।६३।१२

अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मण -
स्परि । यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि
दुरिता स्वस्तये ॥ १९ ॥ - ऋ० १०।६३।१३

यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते
धने । प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा
स्वस्तये ॥ २० ॥ - ऋ० १०।६३।१४

स्वस्ति नः पृथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने
स्वर्वीत । स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो
दधातन ॥ २१ ॥ - ऋ० १०।६३।१५

स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णास्वत्यभि या वाममेति ।
सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु
देवगोपा ॥ २२ ॥ - ऋ० १०।६३।१६

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु
श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजा -
वतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा व स्तेनऽईशत माघशं सो
धुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्
पाहि ॥ २३ ॥ - यजुः ० १।१

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽ

(29)

अपरितासऽउद्भिदः । देवा नो यथा सदमिद्वृधेऽ -
असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥ २४ ॥ - यजुः० २५।१४

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां ॐ रातिरभि नो
निर्वर्तताम् । देवानां ॐ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा नऽ आयुः
प्रतिरन्तु जीवसे ॥ २५ ॥ - यजुः० २५।१५

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे
वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः
स्वस्तये ॥ २६ ॥ - यजुः० २५।१८

स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्व-
वेदाः । स्वस्ति नस्ताक्षर्यो ऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो
बृहस्पतिर्दधातु ॥ २७ ॥ - यजुः० २५।१९

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं
यदायुः ॥ २८ ॥ - यजुः० २५।२१

^{२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २}
अग्नि आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।

^{१ २ ३ १ २ ३ १ २}
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥ २९ ॥ - साम०पू० १।१।१

^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २}
त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः ।

^{३ २ ३ १ २ ३ १ २}
देवेभिर्मानुषे जने ॥ ३० ॥ - साम०पू० १।१।२

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः ।

वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ॥ ३१ ॥
- अथर्व० १।१।१

इति स्वस्तिवाचनम्

(30)

अथ शान्तिकरणम्

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा
वाजसातौ ॥ १ ॥ - ऋ० ७।३५।१

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु
सन्तु रायः । शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा
पुरुजातो अस्तु ॥ २ ॥ - ऋ० ७।३५।२

शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरुची भवतु
स्वधाभिः । शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां
सुहवानि सन्तु ॥ ३ ॥ - ऋ० ७।३५।३

शं नो अग्निज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना
शम् । शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि
वातु वातः ॥ ४ ॥ - ऋ० ७।३५।४

शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु ।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु
जिष्णुः ॥ ५ ॥ - ऋ० ७।३५।५

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः ।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्राभिरिह
शृणोतु ॥ ६ ॥ - ऋ० ७।३५।६

शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु

(31)

यज्ञाः । शं नः स्वरूपां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वपः
शम्वस्तु वेदिः ॥ ७ ॥ - ऋ० ७।३५।७

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु ।

शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु
सन्त्वापः ॥ ८ ॥ - ऋ० ७।३५।८

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः

शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु
वायुः ॥ ९ ॥ - ऋ० ७।३५।९

शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः ।

शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु
शम्भुः ॥ १० ॥ - ऋ० ७।३५।१०

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।

शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं
नो अप्याः ॥ ११ ॥ - ऋ० ७।३५।११

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु

गावः । शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु
पितरो हवेषु ॥ १२ ॥ - ऋ० ७।३५।१२

शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यपः शं

समुद्रः । शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु
देवगौपा ॥ १३ ॥ - ऋ० ७।३५।१३

इन्द्रो विश्वस्य राजति ।

शन्नोऽअस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ १४ ॥ - यजुः ० ३६।८

(32)

शन्नो वातः पवता ॐ शन्नस्तपतु सूर्यः । शन्नः कनिक्रदद्
देवः पर्जन्योऽभि वर्षतु ॥ १५ ॥ - यजुः ० ३६।१०

अहानि शम्भवन्तु नः श ॐ रात्रीः प्रति धीयताम् । शन्न
इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्नऽइन्द्रावरुणा रातहव्या । शन्न
इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय
शँयोः ॥ १६ ॥ - यजुः ० ३६।११

शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये ।

शँयोरभिस्त्रवन्तु नः ॥ १७ ॥

- यजुः ० ३६।१२

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ॐ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः
शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ॐ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा
मा शान्तिरेधि ॥ १८ ॥ - यजुः ० ३६।१७

तद्यक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः
शतं जीवेम शरदः शत ॐ शृणुयाम शरदः शतम्प्र -
ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः
शतात् ॥ १९ ॥ - यजुः ० ३६।२४

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरङ्गमञ्ज्जोतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्प -
मस्तु ॥ २० ॥ - यजुः ० ३४।१९

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः ।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्प -
मस्तुः ॥ २१ ॥ - यजुः ० ३४।२

(33)

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्जोतिरन्तरमृतम्प्रजासु ।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिव-
संकल्पमस्तु ॥ २२ ॥ - यजुः ० ३४।३

येनेदम्भूतं भुवनम्भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम् । येन
यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ २३ ॥
- यजुः ० ३४।४

यस्मिन्नृचः साम यजुंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभा-
विवाः । यस्मिंश्चित् सर्वमोतम्प्रजानां तन्मे मनः शिव-
संकल्पमस्तु ॥ २४ ॥ - यजुः ० ३४।५

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान् नेनीयतेऽभीशुभिर्वा-
जिनऽइव । हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिव -
संकल्पमस्तु ॥ २५ ॥ - यजुः ० ३४।६

स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते ।

शं राजन्नोषधीभ्यः ॥ २६ ॥ - साम० उत्तरा० १।१।३

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे ।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो
अस्तु ॥ २७ ॥ - अथर्व० १९।१५।५

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात् । अभयं
नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥ २८ ॥
- अथर्व० १९।१५।६

॥ इति शान्तिकरणम् ॥

(34)



बृहद्यज्ञः

अग्न्याधानम्

जीयेनो मन्त्र जोली ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा येश्यना घेरथी अग्नि लावी अथवा धीनो टीवो करी कपूरथी अग्नि प्रकटापी कोथ अेक पात्रमां नानी सभिघा राणी अग्नि प्रकट करी यजमाने अथवा पुरोहिते बन्ने हाथमां पात्र लथ यज्ञकुंडमां अग्नि प्रदिप्त करवो.

अग्न्याधानमन्त्रः

ओं भूर्भुवः स्वः ।

- गोभिलगृह्य० १।१।११

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा ।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥

- यजुः० ३।५

(35)

इस मन्त्र से वेदी के बीच में अग्नि को धर, उसपर छोटे-छोटे काष्ठ और थोड़ा कपूर धर, निम्न मन्त्र पढ़के व्यजन=पंखे से अग्नि को प्रदीप्त करे -

अग्निसमिन्धनम्

ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्तं स ॐ
सृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थेऽध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा
यजमानश्च सीदत ॥ - यजु० १५।५४

जब अग्नि समिधाओं में प्रविष्ट होने लगे तब चन्दन की अथवा पलाश आदि की आठ - आठ अंगुल की तीन समिधाएँ घृत में डुबा, उनमें से एक-एक निकाल निम्नलिखित मन्त्रों से एक - एक समिधा को अग्नि में आहुति दें -

अथ समिदाधानस्य चत्वारः मन्त्राः

नीचेना मन्त्रोथी अेक समिधानी आहुति आपपी.

ओम् अयन्त इधम आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व
वर्द्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्म-
वर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥ इदमग्रये जातवेदसे -
इदन्न मम ॥ १ ॥

इस मन्त्र से पहली समिधा चढ़ाएँ ।

नीचेना बे मन्त्रोथी अेक समिधानी आहुति आपपी.

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् । आस्मिन्
हव्या जुहोतन ॥ इससे और

सुसंमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्र जुहोतन । अग्रये
जातवेदसे स्वाहा । इदमग्रये जातवेदसे - इदन्न मम ॥

- यजु० ३।१-२

(36)

इन दोनों मन्त्रों से दूसरी समिधा चढ़ाएँ।

नीयेना मन्त्रथी अेक समिधानी आहुति आपवी।

तन्त्वा^१ समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि । बृहच्छौचा
यविष्ठय स्वाहा । इदमग्रयेऽङ्गिरसे - इदन्न मम ॥

- यजुः ० ३ । ३

इस मन्त्र से तीसरी समिधा की आहुति देवें।

नीयेना मन्त्रथी पांथ वजत धीनी आहुति आपवी।

पंचघृताहुति - मन्त्र :

क्रमशः इस मंत्र से पाँच बार घी की आहुती दे।

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व
वर्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्च -
सेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥ इदमग्रये जातवेदसे -
इदन्न मम ॥

- आश्व० गृह्य० १ । १० । १२

नीयेना मन्त्रोथी वेदीनी थारे जाजु जलसिंचन करपुं।

^१जल - प्रसेचन - मन्त्रा :

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व ॥ आ मन्त्रथी पूर्वभां

ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥ आ मन्त्रथी पश्चिमभां

ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ॥ आ मन्त्रथी उत्तरभां

- गोभि० गृह्य० १ । ३ । १ - ३

१ जल छिड़कने की विधि ऐसी है, पूर्व में - दक्षिण से उत्तर की ओर, पश्चिम में - दक्षिण से उत्तर की ओर., उत्तर में - पश्चिम से पूर्व की ओर तथा देव सवितः' मन्त्र से पूर्व से आरम्भ करके वेदी के चारों ओर जल छिड़कना चाहिए।

(37)

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय ।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं
नः स्वदतु ॥ - यजु० ३०।१

नीचेना ने मन्त्रथी लफ्या प्रमाणे दिशामां धीनी आहुति आपवी.

आधारावाज्यभागाहुतय :

ओम् अग्रये स्वाहा । इदमग्रये - इदन्न मम ॥

(आ मन्त्रथी वेदीना उत्तर भागमां अग्निमां धीनी आहुति
आपवी.)

ओम् सोमाय स्वाहा ॥ इदं सोमाय इदन्न मम ।

- यजु० १०।५

(आ मन्त्रथी वेदीना दक्षिण भागमां अग्निमां धीनी आहुति
आपवी.)

नीचेना ने मन्त्रथी वेदीनी मध्यमां धीनी आहुति आपवी.

आज्यभागाहुतिमन्त्रः

ओम् प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये - इदन्न मम ॥

ओम् इन्द्राय स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय - इदन्न मम ॥

प्रातः कालीन प्रधाम होमः 'मुख्य होम'

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥ १ ॥

ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ २ ॥

ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ ३ ॥

- यजु० ३।१

१ अग्नि के उत्तर एवम् दक्षिण में क्रमशः पश्चिम भाग से पूर्व
की ओर धारा रूप में आधार की आहुतियाँ देनी चाहिए ।

(38)

ओं स॒जू॒र्दे॒वेन॑ स॒वि॒त्रा स॒जू॒रू॒षसेन्द्र॑वत्या । जु॒षा॒णः
सूर्यो॑ वे॒तु स्वाहा॑ ॥ ४ ॥ - यजुः ० ३ । १०

ओं भू॒रग्र॑ये प्रा॒णाय॑ स्वाहा । इ॒दम॑ग्र॒ये प्रा॒णाय॑ - इ॒दन्न
मम॑ ॥ १ ॥

ओं भुव॑र्वा॒यवेऽपानाय॑ स्वाहा ॥ इ॒दं वा॒यवेऽपानाय॑-
इ॒दन्न॑ मम ॥ २ ॥

ओं स्व॑रा॒दि॒त्याय॑ व्या॒नाय॑ स्वाहा । इ॒दमा॑दि॒त्याय॑
व्या॒नाय॑ - इ॒दन्न॑ मम ॥ ३ ॥

ओं भूर्भुवः॑ स्व॒रग्नि॑वा॒य्वादित्ये॑भ्यः प्रा॒णापा॑नव्या॒नेभ्यः
स्वाहा॑ ॥ इ॒दम॑ग्नि॒वा॒य्वादित्ये॑भ्यः प्रा॒णापा॑नव्या॒नेभ्यः : इ॒दन्न
मम॑ ॥ ४ ॥

ओम् आ॒पो ज्योति॑ रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो
स्वाहा॑ ॥ ५ ॥

ओं यां मे॒धां दे॒वग॑णाः पि॒तरश्चो॑पासते । तया॑ मामद्य
मे॒धयाऽग्ने॑ मे॒धावि॑नं कुरु स्वाहा ॥ ६ ॥ यजु० ३२ । १४

ओं विश्वा॑नि दे॒वस॑वि॒तर्दु॑रि॒तानि॑ परा सु॒व । यद्
भद्र॑न्तन्न आ सु॒व स्वाहा॑ । यजु० ३० । ३

ओम् अ॒ग्ने न॑यं सु॒पथा॑ रा॒येऽअ॒स्मान् विश्वा॑नि दे॒व
व॒युना॑नि वि॒द्वान् । यु॒यो॒ध्यस्म॑ज्जु॒हुरा॑णमे॒नो भू॒यिष्ठा॑न्ते
नम॑ऽउक्तिं वि॒धेम॑ स्वाहा ॥ यजु० ४० । १६

नोंधः : जे बन्ने समय यज्ञ करपो होय तो उपरोक्त आठ आहुति
आप्या बाए गायत्री मन्त्रथी जेटली ध्ये होय तेटली आहुति

આપીને સર્વ વૈ પૂર્ણ ૞ સ્વાહા ની ત્રણ આહુતિ આપીને પ્રાતઃ યજ્ઞ સમાપ્ત કરવો અને સાયંકાળ યજ્ઞ કરતી વખતે સંઘ્યાથી શરૂ કરી આધારાવાજ્યભાગાહુતિ સુધી યજ્ઞ કરી, પ્રાતઃ કાળની જગ્યાએ સાયંકાળના મુખ્ય હોમના ચાર મન્ત્રોથી આહુતિ આપવી અને ત્યારબાદ ઉપરોક્ત આઠ આહુતિ બાદ ગાયત્રી મન્ત્ર બોલી જેટલી આહુતિ આપવા ઈચ્છા હોય તેટલી આહુતિ આપ્યા બાદ ઓ૩મ સર્વ વૈ પૂર્ણ ૞ સ્વાહા ની ત્રણ આહુતિ આપી યજ્ઞ સમાપ્ત કરવો.

જો બન્ને સમયનો યજ્ઞ એક જ સમયે કરવો હોય તો નિમ્ન મન્ત્રથી સાયંકાળના યજ્ઞની આહુતિ આપી યજ્ઞ સમાપ્ત કરવો.

સાયંકાલીન - હોમમન્ત્રા : (આહિતાગ્નિહોમઃ)

અબ નીચે લિખે મન્ત્ર સાયંકાલ મેં અગ્નિહોત્ર કે જાનો -

- ઓમ્ અગ્નિર્જ્યોતિર્જ્યોતિરગ્નિઃ સ્વાહા ॥ ૧ ॥ - યજુ૦ ૩૧૯
 ઓમ્ અગ્નિર્વર્ષો જ્યોતિર્વર્ષઃ સ્વાહા ॥ ૨ ॥ - યજુ૦ ૩૧૯
 નીચેના મન્ત્ર મનમાં બોલી આહુતિ આપવી.
 ઓમ્ અગ્નિર્જ્યોતિર્જ્યોતિરગ્નિઃ સ્વાહા ॥ ૩ ॥ - યજુ૦ ૩૧૯
 ઓમ્ સૂજૂર્દેવેન સવિત્રા સૂજૂ રાત્ર્યેન્દ્રવત્યા ।
 જુષાણોઽઅગ્નિર્વેતુ સ્વાહા ॥ ૪ ॥ - યજુ૦ ૩૧૯૦
 ઓં ભૂરગ્રયે પ્રાણાય સ્વાહા ॥ ૧ ॥
 ઓં ભુવર્વાયવેઽપાનાય સ્વાહા ॥ ૨ ॥
 ઓં સ્વરાદિત્યાય વ્યાનાય સ્વાહા ॥ ૩ ॥ - યજુ૦ ૩૧૯
 ઓં ભૂર્ભુવઃ સ્વરગ્નિવાયવાદિતેભ્યઃ પ્રાણાપાનવ્યાનેભ્યઃ
 સ્વાહા ॥ ૪ ॥
 ઓમ્ આપો જ્યોતી રસોઽમૃતં બ્રહ્મ ભૂર્ભુવઃ સ્વરો
 સ્વાહા ॥ ૫ ॥

(40)

(१) जेदेनिक यज्ञ करवो होय तो नीयेना मन्त्रोथी आहुति आपी यज्ञनी पूर्णाहुति करवी.

नीयेना मन्त्रथी त्रएा वजत आहुति आपवी.

ओ३म् । भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ यजु० ३६ । ३

नीयेना मन्त्रथी भात अथवा धीनी आहुति आपवी

ओं सर्व वै पूर्णं ॐ स्वाहा ॥

पैथारिक कान्ति माटे

'सत्यार्थप्रकाश' वांथो

❖ वेदो मां शुं छे ? जएावा माटे

'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' वांथो.

❖ वैदिक सोण संस्कारो नी जएाकारीमाटे

'संस्कारविधि' पसावो.

- १ सामग्री की आहुति केवल प्रातः और सायंकालीन मन्त्रों से देनी है । शेष सब घृत - आहुतियाँ हैं । हों, यदि गायत्री अथवा 'विश्वानि देव' मन्त्र से अधिक आहुतियाँ देनी हों तो घृत के साथ सामग्री की आहुतियाँ भी दी जानी चाहिएँ ।

(41)

पूर्णाहुति - प्रकरणम् :

विशेष प्रसंगो पर तथा साप्ताहिक सत्संगोमां पृष्ठ ४३मां आपो ज्योति मन्त्र थी आहुति आप्या जाट नीयेना मन्त्रोथी बृहट यज्ञ करपो :

आघारावाज्याहुतिमन्त्र :

नीयेना बे मन्त्र थी लप्या प्रमाणे धीनी आहुति आपवी.

ओम् अग्रये स्वाहा ॥ इदमग्रये - इदन्न मम ॥

(आ मन्त्रथी वेटीना उत्तर भागमां अग्निमां धीनी आहुति आपवी)

ओं सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय - इदन्न मम ॥

- गो० गृ० १।८।२४

(आ मन्त्रथी वेटीना दक्षिण भागमां अग्निमां धीनी आहुति आपवी.)

नीयेना बे मन्त्रथी वेटीना मध्यमां धीनी आहुति आपवी.

आज्यभागाहुतिमन्त्रा :

ओं प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये - इदन्न मम ॥

ओम् इन्द्राय स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय - इदन्न मम ॥

व्याहृत्याहुतिमन्त्रा :

ओं भूरग्रये स्वाहा । इदमग्रये - इदन्न मम ॥ १ ॥

ओं भुवर्वायवे स्वाहा । इदं वायवे - इदन्न मम ॥ २ ॥

ओं स्वरादित्याय स्वाहा ॥ इदमादित्याय - इदन्न मम ॥ ३ ॥

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ॥ इदमग्नि - वाय्वादित्येभ्यः- इदन्न मम ॥ ४ ॥

(42)

स्विष्टकृदाहुतिमन्त्र :

ओं यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् ।
अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे ।
अग्रये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां
कामानां समर्द्धयित्रे सर्वात्रः कामान्तसमर्द्धय स्वाहा ॥
इदमग्रये स्विष्टकृते - इदन्न मम ॥

- आश्व० १।१०।२२, शतपथ ब्रा० १४।९।४।२४ ॥

अर्थ - (यत्) जो (अस्य) इस (कर्मणः) कर्म के सम्बन्ध में (अति अरीरिचं) विधि से अधिक किया गया हो (वा) या (इह) इस कर्म में (न्यूनं) कम (अकरम्) किया हो (स्विष्टकृत्) शुभ इच्छाओं को पूर्ण करनेवाला (अग्निं) प्रभु (सर्व-सुष्टं विद्यात्) मेरी सब मनोकामनाओं को जानता है (तत् मे सुहुतं करोति) वह प्रभु मेरे लिए इस कर्म को सुहुत या सफल करे (स्विष्टकृते) शोभन यज्ञ सम्पादक (सुहुतहुते) सुहुत को ग्रहण करनेवाले (सर्व) (प्रायश्चित्ताहुतीनां) सब पाप की प्रतिकार रूपी आहुतियों का (कामानां) सब कामनाओं के (समर्द्धयित्रे) पूर्ण करनेवाले (अग्रये) अग्निरूप परमात्मा के लिए यह आहुति दे रहा हूँ । हे अग्ने (नः) हमारी (सर्वान्) सारी (कामान्) कामनाओं को (समर्द्धय) पूर्ण कीजिये । यह आहुति प्रभु के लिए समर्पित है, मेरे लिए नहीं ।

प्राजापत्याहुतिमन्त्र :

नीयेना मन्त्र मनमां बोली आहुति आपवी :

ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये - इदन्न मम ॥

(43)

आज्याहुतिमन्त्राः (पवमानाहुतयः)

नीचेना चार मन्त्रथी धीनी आहुति आपवी :

ओं भूर्भुवः स्वः । अग्र आयूंषि पवसु आ सुवोर्जमिषं
च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा ॥ इदमग्रये
पवमानाय - इदन्न मम ॥ - ऋ० ९।६६।१९

ओं भूर्भुवः स्वः । अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः
पुरोहितः । तमीमहे महागयं स्वाहा ॥ इदमग्रये
पवमानाय - इदन्न मम ॥ - ऋ० ९।६६।२०

ओं भूर्भुवः स्वः । अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः
सुवीर्यम् । दधद्रियं मयि पोषं स्वाहा ॥ इदमग्रये
पवमानाय - इदन्न मम ॥ - ऋ० ९।६६।२१

ओं भूर्भुवः स्वः । प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा
जातानि परि ता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु
वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये - इदन्न
मम ॥ - ऋ० १०।१२१।१०

अष्टाज्याहुति मन्त्र :

नीचेना आठ मन्त्रोथी सर्प भंगल डार्योमां आहुति आपवी :

ओं त्वं नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽवं
यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र
मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्याम् इदन्न
मम ॥ १ ॥ - ऋ० ४।१।४

(44)

ओं स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽस्या
उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि
मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम् -
इदन्न मम ॥ २ ॥

- ऋ० ४।१।५

ओम् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय ।
त्वामवस्युरा चके स्वाहा ॥ इदं वरुणाय - इदन्न मम ॥ ३ ॥

- ऋ० १।२५।११

ओं तत्वां यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते
यजमानो हविर्भिः । अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न
आयुः प्र मोषीः स्वाहा ॥ इदं वरुणाय - इदन्न मम ॥ ४ ॥

- ऋ० १।२४।११

ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता
महान्तः । तेभिर्नोऽद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु
मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे
विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः - इदन्न मम ॥ ५ ॥

- कात्यायनश्रौत० २५।१।११

ओम् अयाश्चाग्नेऽरयनभिश्चिपाश्च सत्यमित्वमया
असि । अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजं स्वाहा ॥
इदमग्रये अयसे इदन्न मम ॥ ६ ॥

- कात्यायनश्रौत० २५।१।११

ओम् उदुत्तमं वरुणं पाशंस्मदवाधमं वि मध्यमं
श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम्
स्वाहा ॥ इदं वरुणायाऽऽदित्यायाऽदितये च - इदन्न
मम ॥ ७ ॥

- ऋ० १।२४।१५

(45)

ओं भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ । मा यज्ञं
हिं सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः
स्वाहा ॥ इदं जातवेदोभ्याम् - इदन्न मम ॥ ८ ॥

- ऋ० ५।३

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव
बन्धनामृतयोर्मुक्षीय मामृतात् । त्र्यम्बकं सुगन्धिं
पतिवेदनम् । उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामृतः ॥६०॥

પદાર્થ : અમે સુગન્ધિમ્ - શુદ્ધ ગંધયુક્ત પુષ્ટિવર્ધનમ્ - શરીર
આત્મા અને સમાજના બળની વૃદ્ધિ કરનાર, ત્ર્યમ્બકમ્ - રુદ્રરૂપ જગદીશ્વર
છે તેની યજામહે - નિરંતર સ્તુતિ કરીએ.

તેની કૃપાથી ઉર્વારુકમિવ - જેમ એક જાતની કાકડી પાકીને
બન્ધનાત્ - વેલાથી છૂટી પડીને અમૃતતુલ્ય બને છે, તેમ અમે પણ મૃત્યોઃ
- પ્રાણ અને શરીરના વિયોગથી મુક્ષીય - છૂટી જઈએ અને અમૃતાત્ -
મોક્ષરૂપ સુખથી મા - કદી પણ શ્રદ્ધારહિત ન બનીએ.

અમે સુગન્ધિમ્ - શ્રેષ્ઠ ગંધયુક્ત પતિવેદનમ્ - રક્ષણ કરનાર
સ્વામીને આપનાર ત્ર્યમ્બકમ્ - સર્વના અધ્યક્ષ જગદીશ્વરનું યજામહે -
નિરંતર સત્કારપૂર્વક ધ્યાન ધરીએ.

એના અનુગ્રહથી ઉર્વારુકમિવ - જેમ કાકડી પાકીને બન્ધનાત્ -
વેલાથી છૂટી પડી અમૃત સમાન મીઠી બને છે, તેમ અને પણ ઇતઃ - આ
શરીરથી મુક્ષીયઃ - છૂટી જઈ અમૃત - મોક્ષ તા અન્ય જન્મનાં સુખ અને
સત્યધર્મના ફળી મા - પૃથક્ ન બનીએ (૬૦)

(46)

ભાવાર્થ : મનુષ્ય ઇશ્વરને છોડીને કોઈ અન્યની પૂજા ન કરે, કારણ કે વેદમાં તેનું વિધાન ન હોવાથી દુઃખરૂપી ફળદાયક છે. જેમ કાકડી ફળ વેલામાં લાગેલ હોય તે સ્વયં પાકીને સમય થતાં વેલાના બંધનથી છૂટીને ઉત્તમ સ્વાદયુક્ત બને છે, તેમ અમે પૂર્ણ આયુ ભોગવીને શરીરનો ત્યાગ કરીને મુક્તિને પ્રાપ્ત કરીએ.

અમે કદી પણ મોક્ષપ્રાપ્તિનાં કર્મોથી, પરલોકથી અથવા પરજન્મથી વિરક્ત - ઉદાસ બનીએ.

અમે કદીપણ નાસ્તિકતાઓ આશ્રય લઈને ઇશ્વરનો અનાદર ન કરીએ.

જેમ લોકો સાંસારિક સુખ માટે અન્ન, જળ વગેરે પ્રાપ્ત કરવા ઇચ્છે છે, તેમ જ અને ઇશ્વર, વેદ, વેદોક્ત ધર્મ અને મુક્તિમાં નિત્ય શ્રદ્ધા રાખીએ. (૬૦)

નીચેના મન્ત્રથી જેટલી વિશેષ આહુતિ આપવી હોય તેટલી આપવી.

ઓ ઝમ્ ભૂર્ભુવઃ સ્વઃ । તત્સવિતુર્વરેણ્યં ભર્ગો દેવસ્ય ધીમહિ । ધિયો યો નઃ પ્રચોદયાત્ ॥

- યજુઃ ૩૬ । ૩

પૂર્ણાહુતય :

નીચેના મન્ત્રથી ત્રણ વખત આહુતિ આપવી.

ઓં સર્વં વૈ પૂર્ણં ॐ સ્વાહા ॥

(47)

પ્રાર્થના

ओं तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ॥

हे ईश्वर, तું तेજવાળો છે. મને તેજ આપ.

ओं वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि ॥

हे ईश्वर, તું વીર્યવાળ છે. મને વીર્ય આપ.

ओं बलमसि बलं मयि धेहि ॥

हे ईश्वर, તું બળવાળ છે. મને બળ આપ.

ओं ओजोऽस्योजो मयि धेहि ॥

हे ईश्वर, તું ઓજસ્વી છે. મને ઓજસ આપ.

ओं मन्युरसि मन्युं मयि धेहि ॥

हे ईश्वर, તું સમ્યક્ ક્રોધવાળો છે. મને સમ્યક ક્રોધ આપ.

ओं सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥

हे ईश्वर, તું સહનશીલ છે. મને સહનશીલતા આપ.

ओ३म् तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि ॥ १ ॥

ओ३म् आयुर्दा अग्नेऽसि आयुर्मे देहि ॥ २ ॥

ओम् वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि ॥ ३ ॥

ओम् अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृणां ॥ ४ ॥

ओम् मेधां मे देवः सविता आ ददातु ॥ ५ ॥

ओम् मेधां मे देवी सरस्वती आ ददातु ॥ ६ ॥

ओम् मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्त्रजौ ॥ ७ ॥

(48)

पावमानी सूक्तः

ओ३म् । यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम् ।
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना ॥ १ ॥
पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम् ।
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम् ॥ २ ॥
पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघा हि घृतश्च्युतः ।
ऋषिभिः संभृतो रसो ब्राह्मणेष्वमृतं हितम् ॥ ३ ॥
पावमानीदधन्तु न इमं लोकमथो अमुम् ।
कामान्तसमर्धयन्तु नो देवीर्देवैः समाहृताः ॥ ४ ॥
येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा ।
तेन सहस्रधारेण पावमानीः पुनन्तु नः ॥ ५ ॥
पावमानीः स्वस्त्ययनीस्ताभिर्गच्छति नान्दनम् ।
पुण्याँश्च भक्षान् भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छति ॥ ६ ॥

-साम० ६।८ (१०।७)

पूर्णमासी की आहुतियाँ

ओम् अग्नये स्वाहा ॥ १ ॥

ओम् अग्निषोमाभ्याम् स्वाहा ॥ २ ॥

ओं विष्णवे स्वाहा ॥ ३ ॥

अमावास्या की आहुतियाँ

ओम् अग्नये स्वाहा ॥ १ ॥

ओम् इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा ॥ २ ॥

ओं विष्णवे स्वाहा ॥ ३ ॥

उक्त (पक्षेष्टिः) पक्षयज्ञ अर्थात् पौर्णमासी और अमावस्या के तीन मन्त्रों से स्थालीपाक की ३ तीन आहुतियाँ देने के पश्चात् निम्न व्याहृति आज्याहुति ४ चार देनी।

व्याहृत्याहुतिमन्त्राः

ओं भूरग्रये स्वाहा । इदमग्रये - इदन्न मम ॥ १ ॥

ओं भुवर्वायवे स्वाहा ॥ इदं वायवे - इदन्न मम ॥ २ ॥

ओं स्वरादित्याय स्वाहा ॥ इदमादित्याय - इदन्न मम ॥ ३ ॥

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ॥ इदमग्नि - वाय्वादित्येभ्यः - इदन्न मम ॥ ४ ॥

(३) अथ पितृयज्ञः

अग्निहोत्र के पश्चात् पितृयज्ञ है । पितृयज्ञ अर्थात् जीते माता, पिता, आचार्य, गुरु, उपाध्याय आदि मान्यों की यथावत् सेवा करना पितृयज्ञ कहलाता है।

इति पितृयज्ञः

(४) अथ भूतयज्ञः (बलिवैश्वदेव)

निम्नलिखित दस मन्त्रों से घृत - मिश्रित भात की, यदि भात न बना हो तो क्षार और लवणान्न को छोड़कर पाकशाला में जो कुछ भोजन बना हो, उसी की आहुति करें -

ओम् अग्रये स्वाहा ॥ १ ॥ ओम् सोमाय स्वाहा ॥ २ ॥ ओम् अग्निषोमाभ्यां स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥ ४ ॥ ओं धन्वन्तरये स्वाहा ॥ ५ ॥ ओं कुह्वै स्वाहा ॥ ६ ॥ ओम् अनुमत्यै स्वाहा ॥ ७ ॥ ओं प्रजापतये

(50)

स्वाहा ॥ ८ ॥ ओं द्यावापृथिवीभ्या स्वाहा ॥ ९ ॥ ओं
स्विष्टकृते स्वाहा ॥ १० ॥

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों से बलिदान करें । एक
पत्तल व थाली में यथोक्त दिशाओं में भाग रखना । यदि भाग
रखने के समय कोई अतिथि आ जाए तो उसी को देना,
अथवा अग्नि में डालना चाहिए -

भाग रखने के मन्त्र

ओं सानुगायेन्द्राय नमः ॥ १ ॥ इससे पूर्व

ओं सानुगाय यमाय नमः ॥ २ ॥ इससे दक्षिण

ओं सानुगाय वरुणाय नमः ॥ ३ ॥ इससे पश्चिम

ओं सानुगाय सोमाय नमः ॥ ४ ॥ इससे उत्तर

ओं मरुद्भ्यो नमः ॥ ५ ॥ इससे द्वार

ओं अद्भ्यो नमः ॥ ६ ॥ इससे जल

ओं वनस्पतिभ्यो नमः ॥ ७ ॥ इससे मूसल व ऊखल

ओं श्रियै नमः ॥ ८ ॥ इससे ईशान

ओं भद्रकाल्यै नमः ॥ ९ ॥ इससे नैर्ऋत्य

ओं ब्रह्मपतये नमः ॥ १० ॥

ओं वास्तुपतये नमः ॥ ११ ॥ इनसे मध्य

ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥ १२ ॥

ओं दिवाचारिभ्यो भूतेभ्यो नमः ॥ १३ ॥

ओं नक्तंचारिभ्यो भूतेभ्यो नमः ॥ १४ ॥ इनसे ऊपर

ओं सर्वात्मभूतये नमः ॥ १५ ॥ इससे पृष्ठ

ओं पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ॥ १६ ॥ इससे दाक्षेण

-मनु० ३।८७ - ९१

(51)

तत्पश्चात् घृतसहित लवणान्न लेके -
शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम् ।
वायसानां कृमीणां च शनकैर्निर्वपेद् भुवि ॥

- मनु० ३।१२

अर्थ - कुत्ता, पतित, चाण्डाल, पापरोगी, काक और
कृमि - इन छह नामों से छह भाग पृथिवी पर धरे और वे भाग
जिस - जिसके हैं, उसे - उसे खिला दे -

इति बलिवैश्वदेवविधिः

(३) अथ अतिथियज्ञः

तद्यस्यैवं विद्वान् वात्योऽतिथिर्गृहानागच्छेत् ॥१॥
स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयाद् व्रात्य क्वा वात्सीव्रात्योदकं
व्रात्य तर्पयन्तु व्रात्य यथा ते प्रियं तथास्तु व्रात्य यथा ते
वशस्तथास्तु व्रात्य यथा ते निकामस्तथाऽस्त्विति ॥ २ ॥

-अथर्व० १५।११।१,२

जब पूर्ण विद्वान् परोपकारी सत्योपदेशक, गृहस्थों के घर
आवे, तब गृहस्थ लोग स्वयं समीप जाकर उक्त विद्वानों को
प्रणाम आदि करके उत्तम आसन पर बैठाकर पूछें कि कल
के दिन कहाँ आपने निवास किया था ? हे ब्रह्मन् ! जलादि
पदार्थ जो आपको अपेक्षित हों ग्रहण कीजिए, और हम लोगों
को अपने सत्योपदेश से तृप्त कीजिए ।

जो धार्मिक, परोपकारी, सत्योपदेशक, पक्षपातरहित, शान्त,
सर्वहितकारक विद्वानों की अन्नादि से सेवा एवं उनसे प्रश्नोत्तर
आदि करके विद्या प्राप्त करना अतिथियज्ञ कहाता है, उसको
नित्यप्रति किया करें ।

इन पाँच महायज्ञों को स्त्री - पुरुष प्रतिदिन करते रहें ।

(52)

भोजन का मन्त्र

ओम् अन्नपतेऽन्नस्य नो देहानमीवस्य शुष्मिणः ।
प्रप्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

- यजुः० ११।८३

यज्ञोपवीतमन्त्रः

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्रं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ १ ॥

यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ॥ २ ॥

- पार० गृह० २।२।११

ः ह्योपवीतं इति (१)

व्रतधारण करने के मन्त्र

ओम् अग्रे व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम् ।
तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा ।

इदमग्रये - इदं न मम ॥ १ ॥

ओम् वायो व्रतपते० ॥ इदं वायवे - इदं न मम ॥ २ ॥

ओम् सूर्य व्रतपते० ॥ इदं सूर्याय - इदं न मम ॥ ३ ॥

ओम् चन्द्र व्रतपते० ॥ इदं चन्द्राय - इदं न मम ॥ ४ ॥

ओम् व्रताना व्रतपते .. ॥ इदमिन्द्राय व्रतपतये - इदं न मम ॥ ५ ॥

- मं० ब्रा० १।६।९ - १३ ॥ गोभिल० २।१०।१६ ॥

○ इसके आगे 'व्रतं चरिष्यामि' इत्यादि सम्पूर्ण मन्त्र बोलना चाहिए ।

(53)

प्रार्थना गान - १

पूजनीय प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये ।
छोड़ देवें छल-कपट को मानसिक बल दीजिये ॥

वेद की बोलें ऋचाएँ सत्य को धारण करें ।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक - सागर से तरे ॥

अश्वमेधादिक रचाएँ विश्व के उपकार को ।
धर्म - मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को ॥

नित्य श्रद्धा - भक्ति से यज्ञादि हम करते रहे ।
रोग - पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहे ॥

भावना मिट जाए मन से पाप - अत्याचार की ।
कामनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नारि की ॥

लाभकारी हों हवन हर जीवधारी के लिए ।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किये ॥

स्वार्थ - भाव मिटे हमारा प्रेमपथ विस्तार हो ।
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ॥

प्रेम रस में तृप्त होकर वन्दना हम कर रहे ।
'नाथ' करुणारूप करुणा आपकी सबपर रहे ॥

(54)

प्रार्थना गान - २

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ॥
हे ईश सब सुखी हों कोई न हों दुःखारी ।
सब हों नीरोगी भगवन् धनधान्य के भण्डारी ॥
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों ।
दुःखिया न कोई होवे सृष्टि में प्राणधारी ॥

प्रार्थना गान - ३

ओ३म । भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ यजुः ० ३६।३

भावार्थ - प्राणप्रदाता संकट त्राता ।
हे सुखदाता ओम्, ओम् ॥
सविता माता पिता वरेण्यम् ।
भगवन् भ्राता ओम्, ओम् ॥
तेरा शुद्ध स्वरूप करे हम
धारण दाता ओम्, ओम् ॥
प्रेरित प्रज्ञा कर सुकर्म में,
विश्व विधाता ओम्, ओम् ॥

(55)

प्रार्थना गान - ४

द्विज वेद पढ़े सुविचार बढ़ें,
बल पाय चढ़े नित ऊपर को,
अविरुद्ध रहे ऋजुपन्थ गहें,
परिवार कहें वसुधा भर को ।
ध्रुव धर्म धरे, पर दुःख हरे,
सब पार करें भवसागर को,
दिन फेर पिता, वर दे सविता,
हम आर्य करें भुमण्डल को ।

प्रार्थना गान - ५ - राष्ट्रीय प्रार्थना

ओम् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे
रौजन्युः शूरऽइष्व्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्धी'
घेनुर्वोढानडवानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो
युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामेनिकामे नः

पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगेक्षेमो
नः कल्पताम् ॥ यजुः ० २२।२२

भजन

ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हों द्विज ब्रह्म-तेजधारी ।
क्षत्रिय महारथी हों अरिदल - विनाशकारी ॥
होवें दुधारू गौएँ पशु अश्व आशुवाही ।
आधार राष्ट्र की हों नारी सुभग सदा ही ॥
बलवान् सभ्य योद्धा यजमान-पुत्र होवें ॥
इच्छानुसार वर्षे पर्जन्य ताप धोवें ।
फल - फूल से लदी हों औषध अमोघ सारी ।
हो योगक्षेमकारी स्वाधीनता हमारी ॥

प्रार्थना

हे सर्वाधार, सर्वान्तर्यामिन् परमेश्वर ! आप अनन्तकाल से अपने उपकारों की वर्षा किये जाते हो । प्राणिमात्र की सम्पूर्ण कामनाओं को आप ही प्रतिक्षण पूर्ण करते हो । हमारे लिए जो कुछ शुभ है तथा हितकर है उसे आप बिना माँगे स्वयं हमारी झोली में डालते जाते हो, आपके आँचल में अविचल शान्ति तथा आनन्द का वास है । आपकी चरण-शरण की शीतल छाया में परम तृप्ति है, शाश्वत सुख की उपलब्धि है तथा सब अभिलषित पदार्थों की प्राप्ति है ।

हे जगत्पिता परमेश्वर ! हममें सच्ची श्रद्धा तथा विश्वास हो । हम आपकी अमृतमयी गोद में बैठने के अधिकारी बनें । अन्तःकरण को मलिन बनानेवाली स्वार्थ तथा संकीर्णता की सब क्षुद्र भावनाओं से हम ऊँचे उठें । काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि कुटिल भावनाओं तथा सब मलिन वासनाओं को हम दूर करें । अपने हृदय की आसुरी प्रवृत्तियों के साथ युद्ध में विजय पाने के लिए हे प्रभो ! हम आपको पुकारते हैं और आपका ही आँचल पकड़ते हैं ।

हे परम पावन प्रभो ! हममें सात्त्विक वृत्तियाँ जागृत हों । क्षमा, सरलता, स्थिरता, निर्भयता, अहंकार - शून्यता इत्यादि शुभ भावनाएं हमारी सम्पत्ती हों, हमारा शरीर स्वस्थ तथा परिपुष्ट हो, मन सूक्ष्म तथा उन्नत हो, आत्मा पवित्र तथा सुन्दर हो । आपके संस्पर्श से हमारी सारी शक्तियाँ विकसित हों । हृदय दया तथा सहानुभूति से भरा हो । हमारी वाणी में मीठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो । विद्या और ज्ञान से हम परिपूर्ण हो । हमारा व्यक्तित्व महान तथा विशाल हो ।

हे प्रभो । अपने आशीर्वादों की वर्षा करो । दीनादि दीनों के मध्य में विचरने वाले आपके इस चरणारविन्दों में यह हमारा जीवन अर्पित है, इसे अपनी सेवा में लेकर हमें कृतार्थ करो ।

ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः !

संगठन-सूक्त

ओं संसमिद्युवसे वृषन्नग्रे विश्वान्यर्य आ ।
 इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ॥ १ ॥
 हे प्रभो । तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को ।
 वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए धन - वृष्टि को ॥

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
 देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥ २ ॥
 प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो ।
 पूर्वजों की भाँति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो ॥

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
 समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन हविषा जुहोमि ॥ ३ ॥
 हों विचार समान सबके चित्त - मन सब एक हों ।
 ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब श्रेष्ठ हों ॥

समानी व आकृतिः समाना हृदयानि वः ।
 समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥ ४ ॥
 हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा ।
 मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़ें सुख - सम्पदा ॥

(58)

प्रार्थना गान - ६

तुम हो प्रभु चाँद मैं हूँ चकोरा ।
तुम हो कमल फूल मैं रस का भौरा ॥ १ ॥
ज्योति, तुम्हारी का मैं हूँ पतंगा ।
तुम हो आनन्द धन मैं भौरा ॥ २ ॥
जैसे है चुम्बक की लोहे से प्रीति ।
वैसे रहे मुझ में आकर्ष तोरा ॥ ३ ॥
पानी बिना जैसे है मीन व्याकुल ।
तड़पाय ऐसे ही तेरा बिछोड़ा ॥ ४ ॥
इक बूँद जल का मैं प्यासा हूँ चातक ।
पिलावो सुधारस हरो ताप मोरा ॥ ५ ॥

प्रार्थना गान - ७

कोटि कोटि हो वंदन ऋषिराज दयानन्द,
देव दयानन्द करुणासगर दयानन्द,
मेरा लिजो प्रणाम ऋषिराज दयानन्द,..... कोटि कोटि

सोया था देश सारा अविद्या अज्ञान में
वेद की जलाई ज्योति घर - घर जाकर के मेरा
डूबी थी भारत की नैया बीच भँवर में
लेकर पतवार तूही बना खेवनहार..... मेरा
धर्म कर्म का तूने ज्ञान कराया
सच्चे शंकर का तूने ध्यान लगाया.... मेरा
घरबार धनधाम कुटुम्बकबीला
किया न्यौछावर तूने परहित पर उपकार..... मेरा

प्रार्थना गान - ८

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है ।
 जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है ॥
 टुक नींद से अखियाँ खोल जरा, और अपने प्रभु से ध्यान लगा ।
 यह प्रीति करन की रीति नहीं, प्रभु जागत है तु सोवत है ॥
 जो कल करना है आज करले, जो आज करना है अब करले ।
 जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया, फिर पछताये क्या होवत है ॥
 नादान भुगत करनी अपनी, ओ पापी पाप में चैन कहाँ ।
 जब पाप की गठरी शीश धरी, फिर शीश पकड़ क्यों रोवत है ।

प्रार्थना गान - ९

आज मिल सब गीत गाओ, उस प्रभु के धन्यवाद ।
 जिसका यश नित गाते हैं, गन्धर्व मुनिजन धन्यवाद ॥ १ ॥
 मन्दिरों में कन्दरों में, पर्वतों के शिखर पर ।
 देते हैं लगातार सौ-सौ बार मुनिवर धन्यवाद ॥ २ ॥
 करते हैं जंगल में मंगल, पक्षिगण हर शाख पर ।
 पाते हैं आनन्द मिल गाते हैं स्वरभर धन्यवाद ॥ ३ ॥
 कूप में तालाब में सागर की गहरी धार में ।
 प्रेम - रस में तृप्त हो, करते हैं जलचर धन्यवाद ॥ ४ ॥
 शादियों में, जल्सों में, यज्ञ और उत्सव के आदि ।
 मीठे स्वर से चाहिए, करें नारी - नर सब धन्यवाद ॥ ५ ॥
 गान कर 'अमीचन्द' भजनानन्द ईश्वर स्तुति ।
 ध्यान धर सुनते है श्रोता, कान धर - धर धन्यवाद ॥ ६ ॥

प्रार्थना गान - १०

सोती कोम जगाई रे ऋषि दयानन्द ने ।
 जग में धूम मचाई रे ऋषि दयानन्द ने ॥
 छाई थी भारत में भारी घोर अविद्या की अँधियारी
 ज्ञान की ज्योति जलाई रे ऋषि दयानन्द ने ॥ सोती

(60)

डूबी थी भारत की नैया, छोड़ चुके थे इसे खेवैया ।
ले पतवार बचाई रे ऋषि दयानन्द ने ॥ सोती
सोया हुआ देश फिर जागा, कायरता आलस को त्यागा ।
वह आवाज लगाई रे ऋषि दयानन्द ने । सोती

प्रार्थना गान - ११

आनन्द सुधासार, दया कर पिला गया ।
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया ॥ १ ॥
डाला सुधार वारि बढी बेल मेल की ।
देखो समाज फूल कबीले खिला गया ॥ २ ॥
काटे कराल जाल अविद्या - अधर्म के ।
विद्या - वधू को धर्म धनी से मिला गया ॥ ३ ॥
ऊँचे चढे ने क्रूर कुचाली गिरा दिये ।
यज्ञाधिकार वेद पढों को दिला गया ॥ ४ ॥
खोली न कहाँ पोल ढके ढोंग ढोल की ।
ससार के कुपन्थ मतों को हिला गया ॥ ५ ॥
'शंकर' दिया बुझाय दिवाली को देह का ।
कैवल्य के विशाल बदन में मिला गया ॥ ६ ॥

प्रार्थना गान - १२

धन्य है तुझको हे ऋषि, तूने हमें जगा दिया ।
सो सो के लुट रहे थे हम तूने हमें जगा दिया ॥
अंधे को आँखे मिल गई, मुर्दों में जान आ गई ।
जादू सा क्या चला दिया, अमृत - सा क्या पिला दिया ॥
धन्य है तुझको
वाणी में क्या तासीर थी, स्वामीजी तेरी बात पर ।
कितने शहीद हो गये कितनों ने सर कटा दिया ॥
धन्य है तुझको

(61)

श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने सीने में खाई गोलियाँ ।
हंस हंस के हंसराज ने तन मन व धन लुटा दिया ॥
धन्य है तुझको
तेरे दीवाने जिस घड़ी दक्षिण दिशा को चल दिये ।
वैदिक धरम पे हो फिदा दुनिया का दिल दहला दिया ॥
धन्य है तुझको

प्रार्थना गान - १३

गुजरात में निकला चांद हुआ बड़ा आनन्द ।
था नाम दयानन्द जिसका ओ हो ॥
गुजरात में
भारत वर्ष देश में था अन्धकार छाया हुआ,
भ्रम और भूलों ने था सब लोगों को बहकाया हुआ ।
छाय था छल - छंद हाँ छाया था छल - छंद
धर्म पर विधर्मियों के हमले रोज हो रहे थे,
साधु और पुजारी दोनों चदर तान सो रहे थे ।
कर आँखो को बन्द हाँ कर आँखो को बन्द ॥
गुजरात में
आर्यों के हृदय पर भी विद्या का प्रकाश हुआ,
अविद्या अज्ञान का सब अन्धकार नाश हुआ ॥
निकला वैदिक चांद हाँ निकला वैदिक चांद ॥
गुजरात में गुजरात में
लाल और ललनाएँ लाखों रोज लुटे जा रहे थे,
लैला और मजनुँ के गीत इधर हिन्दू गा रहे थे ।
बना बनाकर छन्द..... हाँ बना बनाकर छन्द ॥
गुजरात में

(62)

प्रार्थना गान - १४

शरण प्रभु की आओ रे, यही समय है प्यारे ।
आओ दर्शन पाओ रे, यही समय है प्यारे ॥ १ ॥
छल कपट और झूठ को त्यागो
सत्य में चित्त लगाओ रे, यही समय है प्यारे ॥ २ ॥
उदय हुआ ओम् नाम का भानु,
आओ दर्शन पाओ रे, यही समय है प्यारे ॥ ३ ॥
पान कर इस अमृत फल को,
उत्तम पदवी पाओ रे, यही समय है प्यारे ॥ ४ ॥
हरि की भक्ति बिन नहीं मुक्ति,
दृढ़ विश्वास जमाओ रे, यही समय है प्यारे ॥ ५ ॥
मानुष जन्म अमोलक है यह,
वृथा न इसे गँवाओ रे, यही समय है प्यारे ॥ ६ ॥
कर लो नाम हरि का सिमरन
अन्त को न पछताओ रे, यही समय है प्यारे ॥ ७ ॥
धन्य दयाजो सबको पाले,
मत उसको बिसराओ रे, यही समय है प्यारे ॥ ८ ॥
छोटे - बड़े सब मिलके खुशी से,
गुण ईश्वर के गाओ रे, यही समय है प्यारे ॥ ९ ॥

शिखरिणी छन्दः

दयाया आनन्दो विलसति परः स्वात्मविदितः ।
सरस्वत्यस्याग्रे निवसति मुदा सत्यविमला ॥
इयं ख्यातिर्यस्य प्रलसितगुणा ब्रह्मशरणाऽ-
स्त्येनेनायं ग्रन्थो रचित इति
बोद्धव्यमनघाः ॥ १ ॥

(आर्यभिविनयः)

(63)

प्रार्थना गान - १५

तेरे पूजन को भगवान, बना मन मंदिर आलीशान ।
किसने देखी तेरी माया, किसने भेद तेरा है पाया,
हारे ऋषि मुनि धर ध्यान, बना मन मंदिर आलीशान ।

तेरे

किसने देखी तेरी सूरत, कौन बनावे तेरी मूरत,
तू है निराकार भगवान्, बना मन मंदिर आलीशान ।

तेरे

यह संसार है तेरा मन्दिर तू ही रहा है इसके अन्दर,
ध्यावे ऋषि मुनि धर ध्यान, बना मन मंदिर आलीशान ।

तेरे

तू हर गुल में तू बुलबुल में, हर शाखन में सब पातन में,
तू हर दिल में प्रभु को जान, बना मन मंदिर आलीशान ।

तेरे

तु ही जल में, तू ही थल में, तूम ही वन मे, तूम ही तन में,
तेरा रूप अनूप जहान, बना मन मंदिर आलीशान ।

तेरे

तूने राजा, रंक बनाये, तू भिक्षु को राज बैठाये,
तेरी लीला ईश महान, बना मन मंदिर आलीशान ।

तेरे

प्रार्थना गान - १६

भक्तजन गाये ऋषि तव गीत (२)
 यह भूमि सौभाग्यदायिनी (२)
 बरसे कृपा पुनीत भक्तजन
 टंकारा की पुण्यभूमि यह पावन दिन ले आई
 ऋषि तुम्हारे पावन चरणों से धन्य धन्य कहलाई
 भारत माँ के भाग्य विधाता तेरी जय जय गायें
 तेरे रंग में हम तो रंग गये (२)
 तू ही हमारा मित । भक्तजन (२)
 तेरी महिमा जग जन गायें, आर्य ध्वजा लहलाई (२)
 आर्य जाति के शुभ सुमनों से फूलवाड़ी महकाएँ
 भारत माँ के भाग्य विधाता तेरी जय जय गायें
 तेरे रंग में हम तो रंग गये (२)
 तू ही हमारा गित । भक्तजन (२)

प्रार्थना गान - १७

ओ३म् है जीवन हमारा, ओ३म् प्राणाधार है ।
 ओ३म् है कर्ता विधाता, ओ३म् पालनहार है ॥
 ओ३म् है दुःख का विनाशक, ओ३म् सर्वानन्द है ।
 ओ३म् है बल तेजधारी, ओ३म् करुणाकन्द है ॥
 ओ३म् सबका पूज्य है, हम ओ३म् का पूजन करें ।
 ओ३म् ही के ध्यान से, हम शुद्ध अपना मन करें ॥
 ओ३म् के गुरुमन्त्र जपने से रहेगा शुद्ध मन ।
 बुद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ेगी धर्म में होगी लगन ॥
 ओ३म् के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जायेगा ।
 अन्त में प्रिय ओ३म् हमको मोक्ष पद पहुँचायेगा ॥

(65)

ध्वज गान - १८

जयति ओं ध्वज व्योमविहारी,
विश्वप्रेम प्रतिमा अति प्यारी..... टेक
सत्य सुधा बरसानेवाला, स्नेहलता सरसानेवाला
सौम्य सुमन विकसानेवाला,
विश्वविमोहक भव भयहारी । जयति.....
इसके नीचे बड़े अभय मन सत्यपथ पर सब धर्म धूरिजन,
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन,
आलोकित होवे दिशि सारी । जयति.....
इससे सारे क्लेश शमन हो, दुर्मति दानव द्वेष दमन हो,
अति उज्ज्वल अति पावन मन हो,
प्रेम - तरंग बड़े सुखकारी । जयति.....
इसी ध्वजा के नीचे आकर, ऊँच नीच का भेद भुलाकर,
मिले विश्व मुद मंगल गाकर,
पन्थाई पाखण्ड बिसारी । जयति.....
विश्वप्रेम का पाठ पढ़ावें, सत्य अहिंसा को अपनावें,
जग में जीवन ज्योति जगावें,
त्यागपूर्ण हो वृत्ति हमारी । जयति.....
आर्य जाति का सुयश अक्षय हो,
आर्य ध्वजा की अविचल जय हो,
आर्य जनो का ध्रुव निश्चय हो,
आर्य बनावे वसुधा सारी । जयति.....

(66)

प्रार्थना गान - १९

तू तो बना नहीं इन्सान, कैसे मिले तुझे भगवान् ।
कीनी अपनी नहीं पहचान, कैसे मिले तुझे भगवान् ॥
भीतर भरा ईर्ष्या द्वेष, करता पापाचरण हमेशा ।
हरदम पर निन्दा का ध्यान, कैसे मिले तुझे भगवान् ।
शक्ति धन विद्या तो पाई, पूँजी उल्टी और लगाई ।
भूला निर्मल वैदिक ज्ञान, कैसे मिले तुझे भगवान् ।
पूजा कब्र, ईंट, पाषाण जिसका भला नहीं परिणाम ।
खोया गौरव स्वाभिमान, कैसे मिले तुझे भगवान् ॥
जो व्यापक और अविनाशी, खोजे उसको मक्के काशी ।
भटका दर दर हो हैरान, कैसे मिले तुझे भगवान् ॥
सच्चा सेवा धर्म भुलाया, ईश्वर आज्ञा को टुकराया ।
छूटा मिथ्या नहीं अभिमान, कैसे मिले तुझे भगवान् ।
अमृत घट मे विष भर डाला, चंचल मन को नहीं सँभाला ।
होकर 'देश' ऋषि सन्तान, कैसे मिले तुझे भगवान् ॥

प्रार्थना गान - २०

बोल सको तो मीठा बोलो, कटु बोलना मत सीखो ।
लगा सको तो बाग लगाओ, आग लगाना मत सीखो ।
जला सको तो दीप जलाओ, दिलों को जलाना मत सीखो ।
मिटा सको तो अहं मिटाओ, प्रेम मिटाना मत सीखो ।
बिछा सको तो फूल बिछाओ, शूल बिछाना मत सीखो ।
बता सको तो सुपथ बताओ, पथ भटकाना मत सीखो ।

(67)

प्रार्थना गान – २१

कभी प्यासे को

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं ।
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा ॥
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं ।
बाद आंसु बहाने से क्या फायदा ॥
मैं तो मंदिर गया पूजा आरती की ।
पूजा करते हुए ये ख्याल आ गया ॥
कभी माँ बाप की सेवा की ही नहीं ।
सिर्फ पूजा के करने से क्या फायदा ॥
मैं तो सत्संग गया गुरुवाणी सुनी ।
गुरुवाणी को सुनकर ये ख्याल आ गया ॥
जन्म मानव का लेकर दया न करी ।
फिर मानव कहलाने से क्या फायदा ॥
गंगा नहाने हरिद्वार काशी गया ।
गंगा नहाते ही मन में ख्याल आ गया ॥
तन को धोया मगर मन को धोया नहीं ।
फिर गंगा नहाने से क्या फायदा ॥
मैंने वेद पढ़े मैंने शास्त्र पढ़े ।
शास्त्र पढ़ते हुए ये ख्याल आ गया ॥
मैंने ज्ञान किसी को बांटा नहीं ।
फिर ज्ञानी कहलाने से क्या फायदा ॥
माता – पिता के चरणों में चारों धाम है ।
आजा – आज्ञा ये ही मुक्ति का धाम है ॥
पितामाता की सेवा की ही नहीं ।
फिर तीर्थों में जाने से क्या फायदा ॥

(68)

टंकारा का देव दयानन्द - २२

भारत में जब जड़ - पूजा का, घोर अँधेरा छाया था ।
टंकारा का देव दयानन्द, सूरज बनकर आया था ॥
सच्चे शिव को उसने ढूँढा गंगा की मझधारों में ।
दूर हिमालय की चोटी पर विन्ध्याचल की धारों में
घोर तपस्या कर दण्डी के द्वारे अलख जगाया था ।

भारत में जब.....

गौवें कटतीं, विधवा रोतीं ? देश के वासी सोये थे ।
ऋषियों की सन्तान रुढ़ियों की उलझन में खोये थे ।
सिंहनाद से सच्चे ऋषि ने जागृति - शंख बजाया था ॥

भारत में जब.....

वन-वन घूमा दर-दर भटका । देश - प्रेम की राहों में ।
उसने अपनी मुक्ति देखी, दीन दुःखी की आहों में ।
जन-जन का उद्धार किया, नव - मुक्ति- मार्ग अपनाया था ।

भारत में जब.....

धर्म चक्र का किया प्रवर्तन, पावन - गंगा के तट पर ।
धर्म दम्भ का ध्वंस किया, काशी नगरी के मरघट पर ।
दिग-दिगन्त भी काँप उठे जब ऋषि ने नांद गुँजाया था ।

भारत में जब.....

ओ टंकारा के योगी ! - २३

ओ टंकारा के योगी तेरे नाम की जय - जय होगी

तेरे नाम की जय - जय..... ।

हम टंकारा के सैनिक हैं, हैं दयानन्द के दिवाने,
वेदों की दैवी वाणी के, हम नौजवान हैं परवाने,
हम दयानन्द के सैनिक हैं, दुनियां में धूम मचा देंगे,
यदि पर्वत आए रास्ते में, ठोकर से उसे गिरा देंगे ॥ १ ॥

ओss ओ टंकारा के योगीss.....

(69)

भारत में अँधेरा फैला है, पापों ने डेरा डाला है,
इस पाप ताप को दूर करें, वेदों का यह उजियाला है,
हम पुत्र हैं भारत - माता के, माता पर संकट जब आए,
हम शीश तली पर अपना घर, बलिदान गली में तब जाँ ॥ २ ॥

ओऽऽ ओ टंकारा के योगीऽऽ.....

तूने असत्य के गढ़ तोड़े, पाखण्ड मिटाए युग - युग के,
जन - जन के बन्धन नष्ट किए, भ्रम भगाए युग-युग के,
अम्बर काँपा धरती काँपी, वैदिक ध्वनि की टंकारों से,
शिव की नगरी भी काँप गई, तेरे प्रचण्ड हूँकारों से ॥ ३ ॥

ओऽऽ ओ टंकारा के योगीऽऽ.....

हर वर्ष यहाँ शिवदर्शन को, लाखों की भीड़ उमड़ती है,
हर साल जागरण होता है, 'पीण्डी' पर बलि भी चढ़ती है,
पर सच्चे शिव के दर्शन को, वह आँख कहाँ जो मचलती है ?
लाखों वर्षों में कभी कहीं, दयानन्द - सी ज्योति जलती है ॥ ४ ॥

ओऽऽ ओ टंकारा के योगीऽऽ.....

भजन - २४

प्रभु प्यारे से जिसका सम्बन्ध है,
उसे हर दम आनन्द ही आनन्द है।

मोह ममता से करके किनारा,
लेकर सच्चे पिता का सहारा।
हुआ उसकी रजा में रजामन्द है,
उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है। ॥ १ ॥

जिसकी कथनी में कोयल सी चहक है,
जिसकी करनी में फूलों सी महक है।
प्रेम नम्रता की जिसमें सुगन्ध है,
उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है। ॥ २ ॥

(70)

निन्दा, चुगली न जिसको सुहावे,
बुरी संगत की रंगत न भावे ।
सत्संग ही जिसको पसन्द है,
उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है ॥ ३ ॥

दीन दुःखियों के दुःख को मिटावे,
बनके सेवक भला सब का चाहे ।
नहीं जिसमें पाखण्ड और घमण्ड है,
उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है ॥ ४ ॥
प्रभु प्यारे से जिसका सम्बन्ध है,
उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है ।

भजन - २५

मेरे दाता के दरबार में, सब लोगों का खाता
जैसा कोई कर्म करेगा, वैसा ही फल पाता ।
साधु हो या सद् - गृहस्थी, राजा हो या रानी,
प्रभु की पुस्तक में लिखी है, सबकी कर्म कहानी ।
बड़े - बड़े जमा खर्च का सही हिसाब लगाता । मेरे दाता.....
नहीं चले उसके घर रिश्वत, नहीं चले चालाकी,
प्रभु के अपने लेन देन की, रीति बड़ी है बांकी ।
पुण्य का बेड़ा पार करे, वो पाप की नाव डुबोता । मेरे दाता....
बड़ा कड़ा कानून प्रभु का, बड़ी कड़ी मर्यादा,
किसी को कौड़ी कम नहीं देता, नहीं किसी को ज्यादा ।
इसीलिए तो इस दुनियां का, न्यायाधीश कहलाता । मेरे दाता....
करता सही हिसाब सभी का, न्याय धर्म पर डटके,
उसका फैसला कभी न पलटे, लाख कोई सर पटके ।
समझदार तो शान्त रहता, मुख शोर मचाता ॥ मेरे दाता....
लाख आँख से देख रहा है, तुझे देखने वाला ।
सोच समझ कर कर्म करो शुभ, जोड़ प्रभु से नाता । मेरे
दाता.....

(71)

भजन - २६

सिर जावे तो जावे, मेरा वैदिक धर्म न जावे ।
धर्म दी खातिर ऋषि दयानन्द, पल पल जहारां खावे । मेरा....
धर्म दी खातिर स्वामी श्रद्धानन्द, सीने गोलियां खावे । मेरा....
धर्म दी खातिर लेखराम जी, छुरा पेट विच खावे । मेरा....
धर्म दी खातिर गुरुदत्त जी, जिन्दड़ी घोल घुमावे । मेरा....
धर्म दी खातिर बन्दा बहादुर, अंग अंग कटवाएँ । मेरा....
धर्म दी खातिर बाल हकीकत, अपने प्राण गँवाएँ । मेरा....
धर्म दी खातिर गुरु तेग बहादुर, अपना शीश कटवाए । मेरा....
धर्म दी खातिर गुरु गोविन्द सिंह, चारों लाल गंवाए । मेरा....
धर्म दी खातिर लखां देवियां, अगां विच शरीर जलाए । मेरा....
धर्म ते तन मन जिन्हाने वारे, धर्म वीर कहलाए । मेरा....

भजन - २७

ओ३म् नाम के हीरे मोती,
मैं बिखराऊँ गली - गली ।
लूट ले जो कोई लूटना चाहे,
शोर मचाऊँ गली - गली ।
जिस - जिस ने यह मोती लूटे,
वह सब मालामाल हुए ।
माया के जो बने पुजारी,
वे आखिर कंगाल हुए ।
सोना चांदी माया वालो,
मैं समझाऊँ गली-गली ।
लूट ले जो कोई लुटना....
जिसमें ईश्वर भक्ति नहीं,
वह इन्सान - इन्सान नहीं ।

(72)

रोम - रोम मे बस न जाए,
ऐसा वह भगवान नहीं ।
ओ३म् नाम की माला जप लो,
मैं बतलाऊँ गली - गली,
जिस - जिस ने जैसे भी जैसे,
उस ईश्वर को ध्याया है ।
उस उसने वैसे ही वैसे,
अपने प्रभु को पाया है ।
भारत वर्ष के ऋषियों का,
इतिहास सुनाऊँ गली गली ।
लूट लो...

भजन - २८

ओ३म् का झंडा आया - यह ओ३म् का झंडा आया ।
ऋषि ने लाखों कष्ट उठाए, जहर पिये और पत्थर खाये,
फिर इसको लहराया, यह ओ३म् का झंडा आया ।
श्रद्धानन्द ने गोलियाँ खाके, लेखराम ने जान गंवाके,
ऊँचा इसे उठाया । यह ओ३म् का झंडा....
गुरुदत्त का प्राणों से प्यारा, हंसराज ने जीवन सारा
इस की भेंट चढ़ाया । यह ओ३म् का....
आर्य जनों की शान यही है, आन यही और बान यही है,
ऋषियों ने फरमाया । यह ओ३म्....
लाख मुसीबत सर पे धरेंगे, हम इसकी रक्षा करेंगे,
हम ने इसे अपनाया । यह ओ३म् का झंडा.....

(73)

भजन - २९

सारी दुनियां जगाई, दयानन्द ने,
धूम जग में मचाई, दयानन्द ने ।
सारी दुनियां में अज्ञान की रात थी,
ज्ञान ज्योति जगाई, दयानन्द ने ।
पाप पाखण्ड की मण्डी में हलचल मची,
सत्य रीति बताई, दयानन्द ने
करके उद्धार वेदों का ऋषि राज ने,
गुरु आज्ञा निभाई, दयानन्द ने
सारी दुनियां जगाई, दयानन्द ने ।
धूम जग में मचाई, दयानन्द ने

भजन - ३०

हमारा प्यारा आर्य समाज, नयनों का तारा आर्य समाज ।
देश का प्रहरी आर्य समाज, धर्मवन के हरि आर्य समाज ।
प्रवर्तित करके वेद का ज्ञान, दिखाया सुन्दर सत्य महान ।
प्रभु पूजा का दे सत् ज्ञान, दिया शुभ जीवन मंत्र प्रदान ।
सत्य सनातन आर्य समाज, पाप संहारक आर्य समाज ।
वेद उद्धारक आर्य समाज, घुण्य विस्तारक आर्य समाज ।
दिया मानव को ऐसा बोध, बह गया सारा कल्मशक्रोध ।
मिटाया जग से अत्याचार, बनाया सबको निज परिवार ।
स्वराज उद्घोषक आर्य समाज, सुराज का पोषक आर्य समाज ।
शोभे जिस पर सत्यधर्म का ताज, पीड़ित का त्राता आर्य समाज ।
के हरी सम करके उद्घोष, हिन्दू में भर करके नवजोश ।
धर्म का करके सफल अभियान, विधर्मी किए हताश निदान ।
बनाकर सारे बिगड़े काज, जाति सम्मान बचाया आज ।
किया उद्घाटित वैदिकराज, जगत से न्यारा आर्य समाज ।
हमारा प्यारा आर्य समाज, नयनों का तारा आर्य समाज ।

भजन - ३१

- होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से ।
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान् यज्ञ से ॥
१. ऋषियों ने ऊँचा माना है यह स्थान यज्ञ का ।
करते हैं दुनिया वाले सब सन्मान यज्ञ का ।
दर्जा है तीन लोक में - महान् यज्ञ का ॥
जाता है देव लोक में इन्सान यज्ञ से ॥ होता है
 २. करना हो यज्ञ प्रकट हो जाते हैं अग्नि देव ।
डालो विहित पदार्थ शुद्ध खाते हैं अग्नि देव ॥
सबको प्रसाद यज्ञ का पहुँचाते हैं अग्नि देव ।
बादल बना के भूमि पर, बरसाते हैं अग्नि देव ॥
बदले में एक के अनेक दे जाते हैं अग्नि देव ।
पैदा अनाज होता भगवान् यज्ञ से ॥ होता है ।
 ३. शक्ति और तेज यश भरा इस शुद्ध नाम में ।
साक्षी यही है विश्व के हर नेक काम में ॥
होता है कन्यादान भी इसी के सामने ।
मिलता है राज्य, कीर्ति, सन्तान यज्ञ से ॥ होता है
 ४. सुख शान्तिदायक मानते हैं सब मुनि इसे ।
वशिष्ठ, विश्वामित्र और नारद मुनि इसे ॥
इसका पुजारी कोई पराजित नहीं होता ।
भय यज्ञ कर्त्ता को कभी किञ्चित् नहीं हो ॥
होती हैं सारी मुशकिलें आसान यज्ञ से ॥ होता है
 ५. चाहे अमीर है कोई चाहे गरीब है ।
जो नित्य यज्ञ करता है वह खुशनसीब है ॥
हम सबमें आये यज्ञ के अर्थों की भावना ।
'जख्मी' के सच्चे दिल से है यह श्रेष्ठ कामना ॥
होती है पूर्ण कामना-महान् यज्ञ से । होता है

भजन - ३२

आर्य कैसे होते हैं ?

(तर्ज - नील गगन पे उड़ते बादल आ आ आ...)

वैदिक धर्म समर्पित आर्य कैसे होते हैं ।

लेखराम, श्रद्धानन्द, गुरुदत्त जैसे होते हैं ।

- १) कथनी व करनी में कोई भेद नहीं होता ।
निज कर्तव्य निभाते दिल में खेद नहीं होता ।
जैसे अन्दर है बाहर भी वैसे होते हैं ।
लेखराम, श्रद्धानन्द, गुरुदत्त जैसे होते हैं ।
- २) रहती है सच्चाई ऐसे इनके जीवन में ।
चेहरा साफ नजर आता है जैसे दर्पण में ।
जैसे एक रुपये में सौ पैसे होते हैं ।
लेखराम, श्रद्धानन्द, गुरुदत्त जैसे होते हैं ।
- ३) पर उपकार की खातिर सारा जीवन दे जायें ।
तन मन धन से जन जन की हरे हैं पीड़ायें ।
दयानन्द के सच्चे सैनिक ऐसे होते हैं ।
लेखराम, श्रद्धानन्द, गुरुदत्त जैसे होते हैं ।
- ४) कठिन परीक्षा की अग्नि में आंच नहीं आती ।
राहों में विपरीत दशा भी रोक नहीं पाती ।
'पथिक' कहीं भी हों जैसे के तैसे होते हैं ।
लेखराम, श्रद्धानन्द, गुरुदत्त जैसे होते हैं ।

(76)

भजन - ३३

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय ।
यह अभिलाषा हम सबकी, भगवन् पूरी होय ॥
विद्या, बुद्धि, तेज, बल सबके भीतर होय ।
दूध-पूत धन-धान्य से वंचित रहे न कोय ॥
आपकी भक्ति - प्रेम से, मन होवे भरपूर ।
राग - द्वेष से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर ॥
मिले भरोसा नाम का, हमें सदा जगदीश ।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश ॥
हमे बचाओ पाप से, करके दया दयाल ।
अपना भक्त बनायकर, सबको करो निहाल ॥
दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार ।
सात्विक धीरज वीरता, सबको दो करतार ॥
तुमसे यह विनती करूँ, सुनिये कृपानिधान ।
साधु - संगत सुख दीजिये, दया नम्रता दान ॥



(77)

भजन - ३४

तुम्ही हो माता - पिता तुम्ही हो,
तुम्ही हो बन्धु-सखा तुम्ही हो ।
तुम्ही हो साथी, तुम्ही सहारे,
कोई न अपना, सिवा तुम्हारे ।
तुम्ही हो नैया, तुम्ही खिवैया
तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो ॥
तुम्ही हो

जो खिल सके न, वो फूल हम हैं ,
तुम्हारे चरणों की, धूल हम हैं ।
दया की दृष्टि, सदा ही रखना,
तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो ॥
तुम्ही हो

शरण में आए हैं हम तुम्हारी,
रक्षा करो भगवन हमारी ।
नैया हमारी को पार करना,
तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो ॥
तुम्ही हो



(78)

प्रार्थना गान - २

वंदन

आक्रान्तासु वसुन्धरासु यवनै रासेतु हेमाचलं,
विद्राणे क्षितिभृङ्गणे विकरुणे निद्राति नारायणे ।
निर्विघ्न प्रसरे कलावपि बलान् निष्कण्टकं वैदिकं,
पन्थानं किल तत्र तत्र परिपात्येकः परिव्राड् ऋषिः ॥ १ ॥

परे नित्ये रम्ये परमसुखदे ब्रह्मणि विभौ ।
निराकारे शुद्धे मरण रहिते जन्मनि शुभे ।
स्वकं चेतो येन प्रतिदिनमनन्ते विनिहितम् ।
दयानन्दं वंदे भुवि सकल पाखण्डदलनम् ॥ २ ॥

एकोऽपि सन् निर्भयवीरवर्यः ।
समस्तपाखण्डमखण्डयद्यः ।
सत्यव्रतं श्रेष्ठतमं महान्तम् ।
ऋषिं दयानन्दमहं नमामि ॥ ३ ॥

दयानन्द का जन्म हुआ था सबको आर्य बनाने को ।
वेदों की चौरंग पताका दुनिया में फहराने को ॥
महावीर थे क्यों न फुँ कते कुल शंकाओं की लंका ।
भूमण्डल पर बजा बजाकर दिग्विजयी वैदिक डंका ॥
उनकी परम दया से आर्यो वह विशाल दिन आयेगा ।
अखिल विश्व जब भारत भू के सन्मुख शीश झुकायेगा ॥

जय घोष

१. जो बोले सो अभय - वैदिक धर्म की - जय ।
२. गुरुवर विरजानन्द की - जय
३. जगद् गुरु महर्षि दयानन्द की - जय
४. गौ माता की - सेवा करो
५. जगत् जननी भारत माता की - जय
६. यज्ञ की ज्योति जलती रहे
७. वेद की ज्योति - जलती रहे
८. ओ३म् का झण्डा - ऊँचा रहे
९. संसार के सभी श्रेष्ठ पुरुषों की - जय हों
१०. आर्यसमाज - अमर रहे
११. वैदिक अभिवादन - सबको सादर नमस्ते।
१२. मर्यादा पुरुषोत्तम महाराज रामचन्द्र की - जय
१३. योगीराज कृष्णचन्द्र की - जय

ओ३म् ध्वज फहराने को - ऋषि दयानन्द आये थे
 ईश्वर भक्ति सिखाने को - ऋषि दयानन्द आये थे
 वैदिक नाद बजाने को - ऋषि दयानन्द आये थे
 छूआ-छूत मिटाने को - ऋषि दयानन्द आये थे
 बाल-विवाह छुड़ाने को - ऋषि दयानन्द आये थे
 पापों के गढ़ ढाने को - ऋषि दयानन्द आये थे
 नारी सम्मान बढ़ाने को - ऋषि दयानन्द आये थे
 स्त्री शिक्षा फैलाने को - ऋषि दयानन्द आये थे
 सोई जाति जगाने को - ऋषि दयानन्द आये थे
 पाखण्ड का गढ़ ढाने को - ऋषि दयानन्द आये थे
 जगत् को आर्य बनाने को - ऋषि दयानन्द आये थे
 धुम्रपान छूड़ाने को - ऋषि दयानन्द आये थे
 वैर विरोध मिटाने को - ऋषि दयानन्द आये थे
 प्रेम - भाव बढ़ाने को - ऋषि दयानन्द आये थे

वेद - सन्देश सुनाने को - ऋषि - दयानन्द आये थे
सोया राष्ट्र जगाने को - ऋषि - दयानन्द आये थे
गुलामी की जड़ हिलाने को - ऋषि - दयानन्द आये थे
शुद्धि चक्र चलाने को - ऋषि - दयानन्द आये थे
मानवता सिखलाने को - ऋषि दयानन्द आये थे

वेद - प्रचारक - आर्यसमाज

दलितोद्धारक - आर्यसमाज

देशोद्धारक - आर्यसमाज

विधवा रक्षक - आर्यसमाज

अनाथ रक्षक - आर्यसमाज

हम भी बोलें - जय ऋषि की

तुम भी बोलो - जय ऋषि की

आप भी बोलें - जय ऋषि की

ये भी बोलें - जय ऋषि की

वे भी बोलें - जय ऋषि की

माताएँ बोलें - जय ऋषि की

युवक भी बोलें - जय ऋषि की

बूढ़े भी बोलें - जय ऋषि की

प्रेम से बोलो - जय ऋषि की

ऊपर वाले बोलें - जय ऋषि की

नीचे वाले बोलें - जय ऋषि की

इधर वाले बोलें - जय ऋषि की

ऊधर वाले बोलें - जय ऋषि की

बहनें बोलें - जय ऋषि की

चारों तरफ से बोलो - जय ऋषि की

आरती

ओम् जय जगदीश हरे, पिता जय जगदीश हरे ।
 आर्य जनों के संकट, क्षण में दूर करो ॥ १ ॥
 जो घ्यावे फल पावे, दुःख विनशे मन का ।
 सुख - सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे मन का ॥ २ ॥
 मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किस की ।
 तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिस की ॥ ३ ॥
 तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्यर्यामी ।
 पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ॥ ४ ॥
 तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता ।
 में सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता ॥ ५ ॥
 तुम हो एक अगोचर, सब के प्राणपति ।
 किस विधि मिलूँ दयामय, दो मुझ को सुमति ॥ ६ ॥
 दीनबन्धु दुःखहर्ता, तुम रक्षक मेरे ।
 करुणा-हस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा तेरे ॥ ७ ॥
 विषय - विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
 श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ ८ ॥

आर्य हमारा नाम है, सत्य हमारा कर्म.
ओम् हमारा देव है, वेद हमारा धर्म.

સંસ્થા - શાળા પરિચય

આર્યસમાજ-જામનગરની સ્થાપના ઈ.સ. ૧૯૭૨ માં કરવામાં આવી. જેના આધસ્થાપક સ્મૃતિશેષ ગોકળદાસભાઈ ઠક્કર હતા. બાદમાં તેમને ભાણજી દેવજી આર્ય અને કરશનભાઈ ગઢવીનો સાથ મળ્યો. શરૂઆતમાં યજ્ઞો, વેદપ્રચાર, વ્યાયામ, પ્રવૃત્તિથી શરૂઆત કરવામાં આવી. ઈ.સ. ૧૯૭૪ માં ફક્ત ૬ કન્યાઓથી કન્યા કેળવણી અને વૈદિક વિચારધારાનાં પ્રચાર - પ્રસાર માટે શ્રીમદ્ દયાનંદ કન્યા વિદ્યાલયનાં નામથી ફક્ત બહેનો માટેની કન્યા શાળાની સ્થાપના કરવામાં આવી. આ શાળાની સ્થાપના પણ ગોકળદાસભાઈ ઠક્કર દ્વારા કરવામાં આવી અને આજે આર્યસમાજ - જામનગરનાં પ્રમુખ શ્રી દીપકભાઈ ઠક્કર અને માનદ મંત્રી શ્રી મહેશભાઈ રામાણીના નેતૃત્વમાં ૨૨૦૦ કન્યાઓ ખૂબજ ઓછા દરમાં શિક્ષણ સાથે વૈદિક સંસ્કાર પ્રાપ્ત કરી રહી છે. આ સંસ્થા અને શાળાના વિકાસમાં શ્રી જયંતીભાઈ ઠક્કર, શ્રી ભાણજીભાઈ પટેલ (રામાણી), શ્રી દામજીભાઈ મહેતા, શ્રી મગનલાલ નાંઢા, શ્રી છગનભાઈ મહેતા, શ્રી મુળજી રામજી ચૌહાણ, શ્રી ધર્મવીર ખત્રા, ડૉ. મગનભાઈ ભટ્ટ, શ્રી રામચંદ્રભાઈ વલેરા, શ્રી નિર્ભયભાઈ ભટ્ટનું પણ યોગદાન રહ્યું. આર્યસમાજ - જામનગર દ્વારા જામનગર શહેર અને જિલ્લાની વૈદિક વિચારો પર આધારિત બહેનો માટેની વકતૃત્વ સ્પર્ધાનું આયોજન છેલ્લા ૪૦ વર્ષોથી કરવામાં આવે છે. જેમાં પ્રતિવર્ષ ૧૦૦ થી ૧૫૦ વિદ્યાર્થીનીબહેનો ભાગ લે છે. સંસ્થા શાળાના સુવર્ણયુગ સમયે વિદ્યાર્થીનીઓના પ્રવેશ મેળવવા ૧ કિલોમીટર સુધીની કતારો ખોવા મળતી. હાલમાં શાળામાં અટલ ટીકરીંગ લેબ, ઓડિયો વિઝ્યુઅલ ક્લાસ રૂમ સાથે શિક્ષણ આપવામાં આવે છે. જામનગર શહેર જિલ્લામાં વિજ્ઞાન પ્રવાહ સહિત ચારેય પ્રવાહોમાં શિક્ષણ આપતી આ એકમાત્ર કન્યા શાળા હતી. હોમસાયન્સ એટલે કે ગૃહવિજ્ઞાન પ્રવાહ શરૂ કરનારી ગુજરાત રાજ્યમાં આ પ્રથમ કન્યા શાળા હતી.

પ્રતિ વર્ષ અલગ-અલગ વેદની પારાયણ ઈ.સ. ૧૯૭૦ થી સંસ્થાના વાર્ષિકોત્સવ શ્રદ્ધાનંદ બલિદાન દિવસ નિમિત્તે યોજવામાં આવે છે અને બધા વેદોની પારાયણ ત્રણ વખત પૂર્ણ થઈ ચુકી છે. દૈનિક સત્સંગ, સાપ્તાહિક સત્સંગ, શાળાની વિદ્યાર્થીનીઓ દ્વારા પણ દરરોજ યજ્ઞ, ૧૬ સંસ્કારોના પ્રચાર - પ્રસાર, મેડીકલ સાધન સહાય, ઉનાળામાં નિઃશુલ્ક છાસ વિતરણ કેન્દ્ર, ઓષધાલય, મેડીકલ કેમ્પ અને આર્યવીરાંગના દળની પ્રવૃત્તિઓ નિરંતર ચાલી રહી છે. શાળામાં સમયાંતરે વાલી મીટીંગ બોલાવામાં આવે છે. વિદ્યાલયની વિદ્યાર્થીનીબહેનો ખેલ મહાકુંભમાં દોડ સ્પર્ધા, નૃત્ય સ્પર્ધા, ભજન વિભાગ, વકતૃત્વ સ્પર્ધા, નિબંધ સ્પર્ધા, પોસ્ટર સ્પર્ધા, ગાંધી જયંતિ વકતૃત્વ સ્પર્ધા, એકતા યાત્રા, રાષ્ટ્રીય મતદાર દિવસ સ્પર્ધા, વિજ્ઞાન મેળો અને યુવક મહોત્સવમાં પણ શાળાની વિદ્યાર્થીનીઓ ભાગ લઈ રાજ્ય અને કેન્દ્ર સ્તરે પ્રથમ, દ્વિતીય, તૃતીય નંબરો પ્રાપ્ત કરીને વિદ્યાલયને યશસ્વી બનાવે છે. અને સંસ્થા અને ટ્રસ્ટીઓ તરફથી પ્રતિ સ્પર્ધકને રૂ. ૨૫૦/- થી માંડી અને રૂ. ૨૧૦૦/- સુધીના ઈનામો આપવામાં આવે છે. સંસ્થાના પદાધિકારીઓ, અંતરંગ સદસ્યો અને સદસ્યો, સંસ્થા અને શાળાના કર્મચારીઓ બધાજ માટે શિસ્તના ઉચ્ચતમ માપ દંડો નિર્ધારિત કરેલ છે. જેનું દરેકે સ્વયં શિસ્ત દાખવી પાલન કરે છે. સમગ્ર બિલ્ડીંગને INTERNET PROTOCOL, NIGHT VISION કલર, CCTV કેમેરા થી સુસજ્જ કરવામાં આવી. ૨૦૧૮ થી સંસ્થા અને શાળાના તમામ હિસાબો, પત્રવ્યવહાર, મીનીટસ વિગેરે સંપૂર્ણ કોમ્પ્યુટરાઈઝ કરવામાં આવેલ છે. સેન્ટ્રલ એનાઉન્સીંગ સીસ્ટમ જે બંધ પડેલ હાલતમાં હતી તેને શરૂ કરવામાં આવી. સમગ્ર ભવનની છતમાં કાયમી ધોરણે પાણીના લીકેજની સમસ્યા હલ કરવા માટે ચાઈના મોજેક લગાવવામાં આવી. સંસ્થા, શાળાની ગતિવિધીઓના વિસ્તાર વિકાસ અને નવી જમીન ખરીદવાનું આયોજન છે અને પ્રત્યેક માસ એક પુસ્તક પ્રકાશન કરવાનું પણ આયોજન છે.

आर्य समाज के नियम व उद्देश्य

१. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।
२. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
३. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना - पढ़ाना और सुनना - सुनाना सभी आर्यों का परम धर्म है।
४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
७. सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।
८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति से अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

वैचारिक क्रान्ति के लिए अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश
अवश्य पढ़ें।